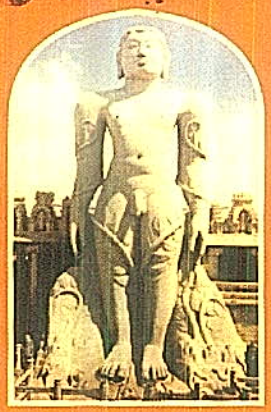

जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का मुखपत्र

वीर निर्वाण संवत् 2543

VOLUME : 7 ISSUE : 8 MUMBAI, FEBRUARY 2017 PAGES : 40 PRICE : ₹25

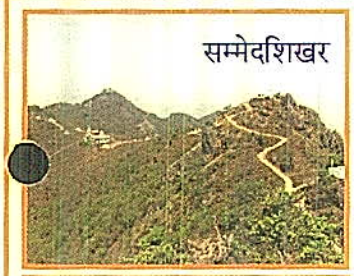

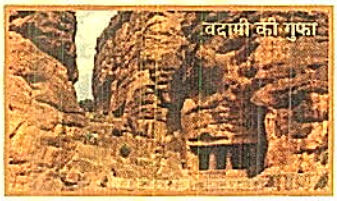

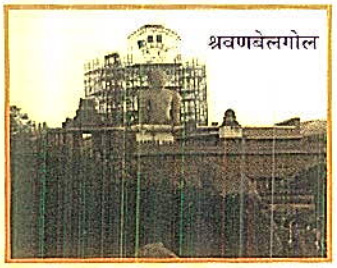

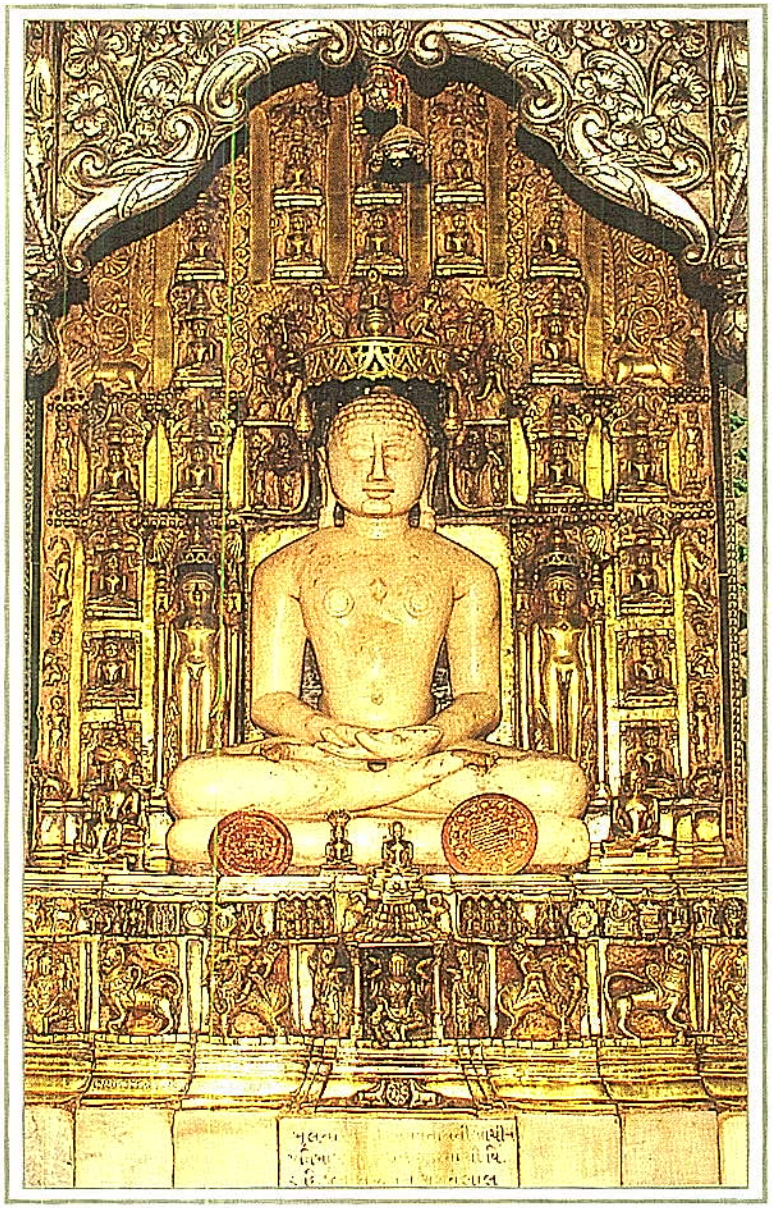

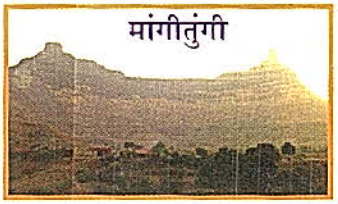

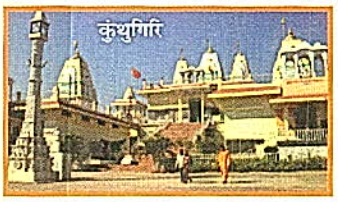

तीर्थंकर श्री 1008 संभवनाथ भगवान, ईडर क्षेत्र - गुजरात

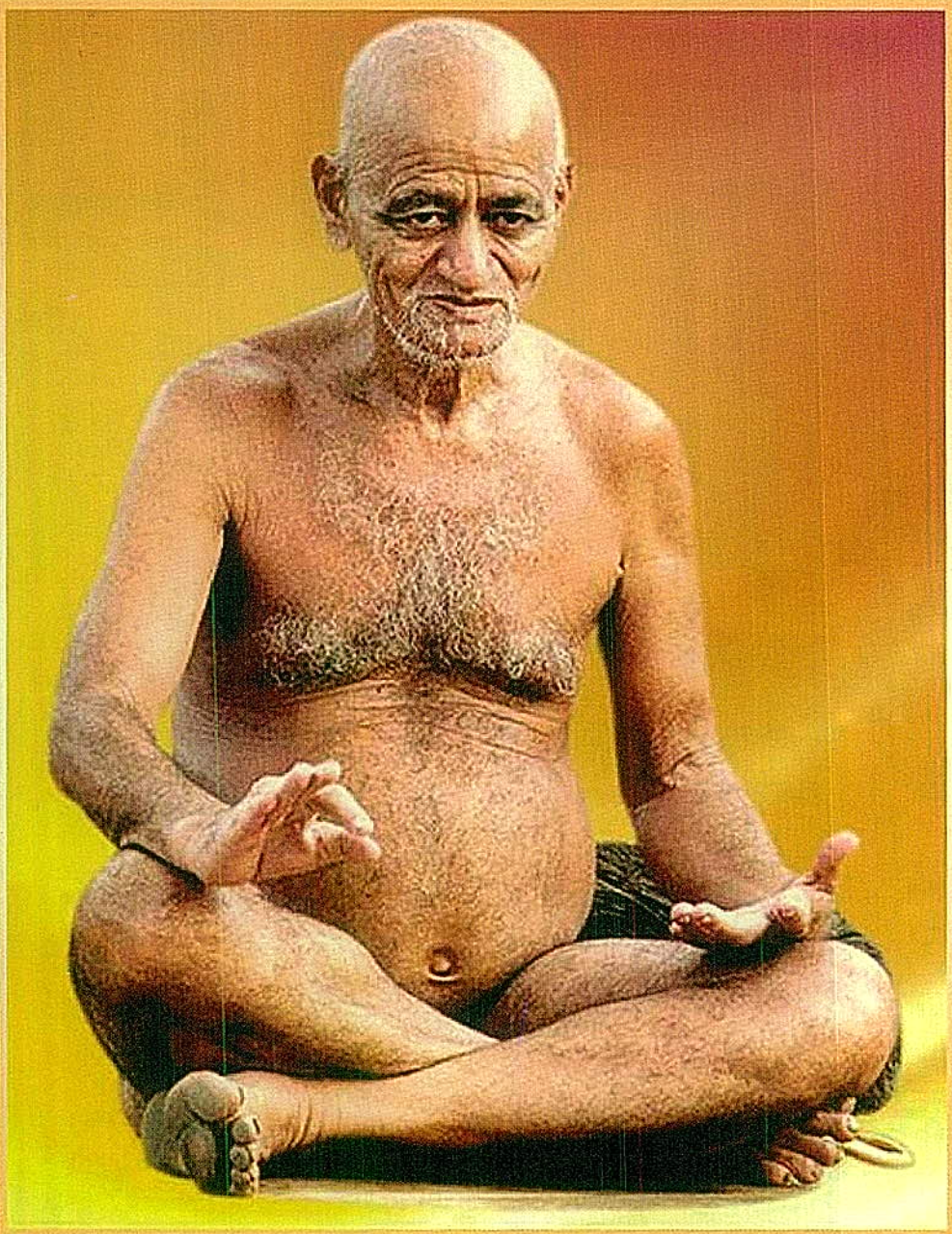

कुन्द कुन्द के 'समयसार' का, सार हमें जो बता रहे।
समन्तभद्र सा डंका घर–घर, द्वार–द्वार पर बजा रहे।।
भोले–भाले अनाथ जन के, हैं जो चलते–फिरते धाम।
ऐसे गुरू 'विद्यासागर' को शत–शत बार प्रणाम।।

R.K. MARBLE GROUP

Corporate Office : Makrana Road, Madanganj-Kishangarh, Dist.Ajmer(Raj.)-305801
Tel : +91 1463 301100, 250501-3, Fax : +91 1463 250601
E-mail : info@rkmarble.com, Website : www.rkmarble.com

तीरथ करलो पुण्य कमालो, प्रभु के गुण गालो

वर्ष २०१७ का फरवरी माह भी बीता चला जा रहा है, निरंतर प्रगति के पथ पर आरूढ़ होकर हम भौतिक-लौकिक व सांसारिक क्षेत्र में तो बहुत उन्नति कर लेते हैं, लेकिन सही समझ व सत्य के अन्वेषण के बिना हमारी उन्नति, उन्नति न होकर मात्र उन्नति की झूठी कल्पना हो जाती है। जो कालान्तर में हमारे दुःख का कारण बनती है।

प्रत्येक प्राणी सुख चाहता है लेकिन सुख कहां है इसकी खोज में सारा जीवन समाप्त हो जाता है, जब कुछ बचता है तब लगता है कि अब क्या करें, मनुष्य को निरंतर चिंतनशील रहना चाहिये, उसे निरंतर यह आभास होना चाहिये कि हमारे सांसारिक कार्यों के बीच हमें अपनी आध्यात्मिक ऊर्जा को प्राप्त करने का प्रयास भी निरंतर करते रहना चाहिये।

यह आध्यात्मिक ऊर्जा का स्त्रोत कहीं न कहीं हमारे तीर्थ हैं, जहां से हमारे महापुरुषों ने निर्वाण पद की प्राप्ति की वे अत्यन्त पवित्र, पावन व आध्यात्मिक ऊर्जा के स्त्रोत हैं। तीर्थों पर जाने से हमें शांति का अनुभव होता है, उसका कारण मोक्षगामी महापुरुषों की त्याग-तपस्या का बल है।

हम निरंतर आप सभी को तीर्थ जाने की प्रेरणा प्रदान करते हुए यह भावना व्यक्त कर रहे हैं कि तीर्थ यात्रा करने से ही हमारे तीर्थ बचेंगे, बच्चों में संस्कार आएंगे। इसीलिए कहा है 'तीरथ कर लो, पुण्य कमा लो, प्रभु के गुण गालो'।

तीर्थक्षेत्र हमारे आध्यात्मिक जागरण के साधन हैं, द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावरूप वातावरण का प्रभाव चित्त वृत्ति पर पड़ता है। जीवन में प्रेरणा प्राप्त करने के लिए व्यक्ति विशेष के जीवन और स्थल विशेष की घटनाएं बहुत बड़ा काम करती हैं।

महान तीर्थ सिद्धक्षेत्र महापुरुषों की निर्वाण भूमि है। वह कल्याण एवं पुण्यदायक है वहां ध्यान करने से आत्मसिद्धि प्राप्त होती है। तीर्थ वह घाट है जहाँ से तैरकर पार उतरा जा सकता है। भव-वारिधि से तरने का महत्वपूर्ण साधन तीर्थभूमि है।

ध्यान रहे, जीवन निर्वाह तो संसार के समस्त प्राणी करते ही है चाहे वे लापरवाह हो या सर्व चाह, चाहे बेपरवाह हो या स्वात्मचाही या शिवराही, आज आवश्यकता मात्र निर्वाह की नहीं जीवन निर्माण की भी है,

क्योंकि जीवन में समीचीन निर्माण के बिना कर्मों से निर्वाण होना असंभव है, अत: निर्माण जरूरी है। मनुष्य ही जीवन का समीचीन निर्माण करने में सक्षम व समर्थ है। जीवन निर्माण के लिए देव-शास्त्र-गुरू की भक्ति, श्रद्धा, विश्वास, समर्पण होना आवश्यक है, ये संस्कार हमें तीर्थों के माध्यम से ही प्राप्त होते हैं, आइये हम तीरथ करके पुण्य भी कमाएं और आत्म कल्याण की भावना भाएं।

विगत माह में हमारे चलते-फिरते तीर्थ संत आर्यिका माताजी दुर्घटना में मृत्यु को प्राप्त हुए हैं, यह बड़ी ही चिंता का विषय है, मैं विगत माहों में इस बात को इंगित कर चुकी हूं कि हम साधु विहार में सहभागी बनें, हमें हमारी पहचान साधु संस्था को बनाकर रखने में अपना योगदान तन-मन-धन से सुनिश्चित करना चाहिये। अपनी विनयांजलि समर्पित करते हुए तीथक्षेत्र कमेटी महापरिवार यह कामना करता है कि हम सभी इस दिशा में चिंतन करेगें।

तीर्थक्षेत्र कमेटी की कोटा में हुई बैठक में अनेक निर्णय लिए गए हैं। तीर्थवंदना के सम्पादक मण्डल की बैठक में भी पत्रिका के सुधार हेतु अनेक चर्चायें हुई हैं। कोटा से हमें अच्छे सहयोगी प्राप्त हुए हैं, वहां हुए भव्य स्वागत से हमारी जिम्मेदारी बढ़ी है, हमारा पूरा प्रयास रहेगा कि हम तीर्थक्षेत्र कमेटी के कार्यों को निरंतर आगे बढ़ाकर तीर्थों के लिए अच्छे से अच्छा कार्य करें। तीर्थों पर बुलाये गए निबंधों के माध्यम से भी श्रेष्ठ सुझाव प्राप्त हुए हैं। सभी लेखक-लेखिका धन्यवाद की पात्र हैं। मेरा भारतवर्ष की दिगम्बर जैन समाज से आग्रह है कि पूर्वाग्रहों से ग्रसित होकर कोई कार्य न करें, प्रत्येक कार्य में हम धर्म-समाज हित का चिंतन अवश्य करें, तभी हमारी संस्कृति बचेगी, संस्कृति रहेगी तभी हमारा अस्तित्व रहेगा।

दिगम्बर सांस्कृतिक परम्परा का महत्वपूर्ण गौरव उत्सव गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली महामस्तकाभिषेक महोत्सव फरवरी-२०१८ में होना है। बसंत पंचमी १ फरवरी २०१७ को श्रवणबेलगोला श्रीक्षेत्र पर पूज्य जगद्गुरू कर्मयोगी स्वस्ति श्री चारूकीर्तिजी भट्टारक स्वामीजी के नेतृत्व में राष्ट्रीय कमेटी की बैठक में पूज्य स्वामीजी ने महत्वपूर्ण घोषणाएं की हैं, महामस्तकाभिषेक महोत्सव का विधिवत आगाज़ भव्यतम तरीके से हो गया है। सम्पूर्ण राष्ट्र के श्रेष्ठ व ज्येष्ठ प्रतिनिधियों ने श्रवणबेलगोला पहुंच कर दिखा दिया है कि महामस्तकाभिषेक महोत्सव के लिए हम सभी दिगम्बर समाजजन एकजुट हैं। यह एकजुटता का महोत्सव है, हम सबकी आस्था का महाकुंभ है।

इसी भावना के साथ हम सभी तीर्थयात्रा करें, तीर्थों को आर्थिक रूप से सुदृढ़, सम्पन्न व श्रद्धा का केन्द्र बनाएं, पुण्यार्जन करें, आध्यात्मिक जागरण करें, हम सबके अन्दर दिगम्बरत्व के प्रति आस्था प्रगाढ़ हो, मुनि-आर्यिका संघ के विहार में हम सब सहभागी बनें, अपनी संस्कृति बचायें।

इन्हीं भावनाओं के साथ -

-सरिता एम.के.जैन

Sarita Jain

राष्ट्रीय अध्यक्ष

तीर्थों को तकनीक से जोड़ें

वर्तमान युग सूचना एवं संचार क्रांति का है। सूचनाओं के आदान-प्रदान एवं सम्पर्क के माध्यम इतने तीव्र हो गये हैं कि सम्पूर्ण विश्व एक गाँव में तब्दील हो गया है। हमें भी अपनी संस्कृति एवं सांस्कृतिक धरोहरों की रक्षा हेतु युगानुकूल आधुनिक तकनीक से जुड़ना होगा वरना हम इतना पीछे रह जायेंगे कि तीव्र गति से भागती युवा पीढ़ी को पकड़ना मुश्किल ही नहीं असंभव हो जायेगा और जब कार्यसक्षम, उर्जावान युवा शक्ति हमारे साथ नहीं होगी तो हम अपनी महत्वाकांक्षी योजनाओं को गति कैसे देंगे?

४० वर्ष पूर्व जब भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी ने भारत के दिगम्बर जैन तीर्थ शीर्षक ५ वृहदाकार पुस्तकें प्रकाशित की थी तब उसमें आवागमन के साधनों में बैलगाड़ी की व्यवस्था, भोजन हेतु अंगीठी, कोयले, बर्तन आदि की उपलब्धता की बात लिखी थी। १२ वर्ष पूर्व मेरे द्वारा सम्पादित दि. जैन तीर्थ निर्देशिका में रेल, बस मार्ग, निकटतम रेल्वे/बस स्टेशन, आवागमन के साधनों, भोजनालय की स्थिति के साथ ही S.T.D./P.C.O की सुविधा की जानकारी दी थी किन्तु इन १२ वर्षों में स्थिति बहुत बदली है। अब नये संस्करण में S.T.D./P.C.O की जरूरत नहीं रही क्योंकि सबके हाथों में मोबाइल रहते हैं। रेल/बस के साथ-साथ वायु मार्ग से जाने हेतु नजदीकी हवाई अड्डा भी बताने की जरूरत महसूस की जा रही है।

पिछले दिनों भारत सरकार द्वारा की गई नोटबन्दी एवं डिजिटल पेमेन्ट को बढ़ावा देने के प्रयासों के बाद तो आनलाइन बैंकिंग को मानों पंख लग गये हैं। युवा वर्ग अब NEFT/Paytm आदि का खुलकर प्रयोग कर रहा है। नगद व्यवहार के बाद अब चेक का चलन भी शनैः-शनैः घटेगा आनलाइन ट्रांसफर निरन्तर बढ़ेगा। अब तीर्थक्षेत्रों को दान राशि प्राप्त करने हेतु अपने बैंक का नाम, शाखा का नाम, खाते का नाम, खाता नं. एवं I.F.S. कोड भी विभिन्न माध्यमों से प्रचारित प्रसारित करना होगा। वरना लोग चाहकर भी दान न दे सकेंगे। जैन तीथवन्दना में भविष्य में प्रकाशित होने वाले तीर्थों के परिचय में भी हम इन्हें समाहित करेंगे।

क्षेत्र पर उपलब्ध सुविधाओं एवं क्षेत्र का महत्व, अतिशय आदि का प्रचार भी Website के माध्यम से किया जाना चाहिए। परस्पर सम्पर्क हेतु आज सबसे सस्ता, त्वरित माध्यम email है। प्रबन्धकों के यह तर्क कि हमारे यहाँ बिजली बहुत कम आती है। हमारे तीर्थ पर कम्प्यूटर चलाने वाली प्रशिक्षित मानव शक्ति (आपरेटर), सिस्टम आदि उपलब्ध नहीं है, आत्मघाती होंगे क्योंकि इन व्यवस्थाओं में होने वाला निवेश अन्ततोगत्वा लाभ ही देगा। यात्री संख्या बढ़ने से ही तीर्थ विकास होगा। भले ही अनुरोध पर सशुल्क भोजनालय की व्यवस्था हो किन्तु होनी जरूर चाहिए।

तीर्थक्षेत्र कमेटी की आंचलिक समितियों के अनुदानों से अनेक क्षेत्रों पर बिजली, पानी, बाउन्ड्रीवाल की सुविधायें जुटाई जा चुकी है। आज कम्प्यूटर की व्यवस्था भी आधारभूत आवश्यकता है। इसका प्रबन्ध करके क्षेत्र के विकास का पथ प्रशस्त किया जा सकता है।

हमारे समाज का युवा आज इतर समाज के साथ कदमताल कर रहा है। उच्च शिक्षा प्राप्त जैन युवा रोजगार के लिए बैंगलोर, पूना, हैदराबाद, नोएडा, गुडगॉव, चेन्नई, दिल्ली, कोलकाता आदि महानगरों, औद्योगिक केन्द्रों की ओर पलायन कर रहे हैं। स्वतंत्र आजीवकोपार्जन में सक्षम होने के कारण वे आत्मविश्वास से लबरेज है। वे सतत १२-१४ घंटे काम करते हैं। प्रतिदिन ३-४ घंटे उनके यात्रा में खर्च होते है। ऐसे में सप्ताहांत के अवकाश में उनको परिवार के साथ आमोद-प्रमोद युक्त बिताने हेतु कुछ ऐसे पल/स्थान चाहिये जहाँ उन्हें शारीरिक एवं आत्मिक शांति प्राप्त हो। जीवन में अनिश्चितता बढ़ने के कारण ईश्वर के प्रति श्रद्धा एवं आस्था भी बढ़ी है। सम्यक धार्मिक अध्ययन न होने के कारण अनेकषः यह आस्था मिथ्यात्व की ओर उन्मुख हो जाती है जिससे हमारे तीर्थ अनेक लाभों से वंचित हो जाते है।

आपकी जैन तीर्थवन्दना में जैन तीर्थों के संरक्षण एवं विकास में युवाओं की भूमिका शीर्षक ३ लेख क्रमशः दिसम्बर, जनवरी एवं फरवरी अंकों में प्रकाशित किये गये हैं। ये तीनों पुरस्कृत आलेख है इनमें युवा लेखकों ने भी युवाओं को तकनीक से जोड़ने पर जोर दिया है। केन्द्रीय तीर्थक्षेत्र कमेटी को सभी दिगम्बर जैन तीर्थों हेतु सर्वसुविधा सम्पन्न Website को विकसित करने का प्रयास करना चाहिये, वहीं आंचलिक समितियाँ अन्य तकनीकी मार्गदर्शन प्रदान कर आवास की Online booking की व्यवस्था करा सकती है।

हमारी युवा शक्ति अपने ज्ञान का लाभ तीर्थों को देने हेतु तत्पर है किन्तु नेतृत्व को उनका लाभ लेने का समय ही नहीं है। क्या ही अच्छा हो यदि किसी एक स्थान पर इस क्षेत्र में सहयोग देने के इच्छुक १०-१२ लोगों को ससम्मान केन्द्रीय/आंचलिक समितियों द्वारा बुलाया जाये। अन्य कार्यक्रमों से दूर रहकर उनकी बात को सुना जाये एवं आवश्यक सूचनायें/जानकारियाँ उपलब्ध कराई जाये तो तीर्थों के विकास की दिशा में एक प्रभावी कदम बढ़ सकता है। तीर्थों की Website के निर्माण या Online booking की सुविधायें विकसित करने के इच्छुक युवा/सामाजिक कार्यकर्ता/तीर्थ प्रबन्धक मुझसे सम्पर्क करें हम उनमें समन्वय कर कार्य की दिशा तय कराने हेतु प्रस्तुत है।

एक अच्छी पहल हमें मंजिल तक जरूर पहुँचायेगी प्रस्तुत अंक पर पाठकीय प्रतिक्रियाओं का स्वागत है।

डॉ. अनुपम जैन
प्रधान सम्पादक
'ज्ञानछाया', डी-१४, सुदामा नगर,
इन्दौर-४५२००९ (म.प्र.)
anupamjain3@rediffmail.com

जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट का

मुखपत्र

वर्ष 7 अंक 8 फरवरी 2017

श्रीमती सरिता एम.जैन	अध्यक्ष
श्री प्रदीप जैन पी.एन.सी.	उपाध्यक्ष
श्री वसंतलाल एम.दोशी	उपाध्यक्ष
श्री नीलम अजमेरा	उपाध्यक्ष
श्री पंकज जैन	उपाध्यक्ष
श्री संतोष पेंढारी	महामंत्री
श्री शिखरचंद पहाड़िया	कोषाध्यक्ष
श्री विनोद बाकलीवाल	मंत्री
श्री वीरेश सेठ	मंत्री
श्री शरद जैन	मंत्री
श्री खुशाल जैन सी.ए.	मंत्री

प्रधान संपादक
प्रो.अनुपम जैन, इंदौर
संपादक
उमानाथ दुबे

परामर्श मंडल
डॉ. भागचन्द जैन 'भास्कर', नागपुर
श्री शांतिलाल जैन जांगड़ा, उदयपुर
प्रो.डॉ.अजित दास, चेन्नई
प्रो.डी.ए.पाटील, जयसिंगपुर
श्री अनिलकुमार जोहरापुरकर, नागपुर
श्री स्वराज जैन, दिल्ली
श्री राजेन्द्र महावीर, सनावद

कार्यालय
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी
हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई 400 004.
फोन : 022-2387 8293 फैक्स: 022-23859370
e-mail : tirthvandana4@yahoo.com
e-mail : tirthvandana4@gmail.com
Website : www.digamberjainteerth.com

मूल्य

वार्षिक	:	300 रुपये
त्रिवार्षिक	:	800 रुपये
आजीवन (दस वर्ष)	:	2500 रुपये

तीरथ करलो पुण्य कमालो, प्रभु के गुण गालो	3
तीर्थों को तकनीक से जोड़ें	5
जैन तीर्थों की प्रगति एवं व्यवस्था में महिलाओं की सहभागिता	7
जैन तीर्थों के संरक्षण एवं विकास में युवाओं की भूमिका	12
पांडुलिपि संरक्षण एवं म.प्र. के जैन शास्त्र भंडार	14
ध्वजा: हमारी अस्मिता	22
EXISTENCE OF JAINISM IN SHRI LANKA	25
श्री शांतिगिरि अतिशय क्षेत्र आमीगाँव	28
Suggestions to protect the hill at Konakondla, AP from Destructions	31
हमारे नये बने सदस्य	37

श्री गिरनार जी सिद्धक्षेत्र पर श्री 1008 सिद्धचक्र महामण्डल विधान एवं विश्वशांति महायज्ञ का भव्य आयोजन

प्रथम बार मानस्तंभ का महाअभिषेक जैन धर्म के 22वें तीर्थंकर भगवान श्री 1008 नेमिनाथ की तप, ज्ञान एवं मोक्ष कल्याणक की पावन भूमि पर स्थित श्री बंडीलाल दिगम्बर जैन मंदिर जी में राष्ट्रसंत परम पूज्य आचार्य श्री 108 ज्ञानसागर जी महाराज की पावन प्रेरणा एवं आशीर्वाद से उक्त कार्यक्रम रविवार दिनांक 5 मार्च 2017 से 12 मार्च 2017 तक रखा गया है, जिसमें आप सभी सादर आमंत्रित हैं।

सकल दिगम्बर जैन समाज, सूरत

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी को प्रेषित की जाने वाली राशि बैंक ऑफ बड़ौदा, वी. पी. रोड, मुंबई के सेविंग खाता क्र. 13100100008770, IFSC CODE BARB0VPROAD अथवा बैंक ऑफ इंडिया, सी. पी. टैंक, मुंबई के खाता क्रमांक 001210100017881, IFSC CODE BKID0000012 में किसी भी शाखा में नि:शुल्क जमा कराकर उसकी सूचना मुंबई कार्यालय को देने की कृपा करें।

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं, सम्पादकों का इन विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है।

गत 2 अंकों में आपने महिलावर्ग एवं युवावर्ग के अन्तर्गत अखिल भारतीय निबन्ध प्रतियोगिता में प्रथम एवं द्वितीय स्थान पर आये निम्नांकित 4 लेखों को पढ़ा-

महिलावर्ग	युवावर्ग
1 श्रीमती उषा पाटनी	1. श्री विकास वात्सल्य
2. डॉ. विमला जैन विमल	2. सौ. शिल्पा पंकज कासलीवाल

इस अंक में तृतीय स्थान पर रहे 2 आलेख हैं।

1. श्रीमती रेखा पतंग्या, इन्दौर (म.प्र.)
2. श्री शैलेन्द्र सर्राफ, ललितपुर (उ.प्र.)

पाठकों के विचार इन सभी लेखों पर आमंत्रित हैं।

डॉ. अनुपम जैन
प्रधान-सम्पादक

जैन तीर्थों की प्रगति एवं व्यवस्था में महिलाओं की सहभागिता

- रेखा पतंगिया, इंदौर

वादीभसिंह सुरि ने क्षत्रचूड़ामणि में लिखा है-

पावनानि हि जायन्ते स्थानान्यपि सदाजश्रयात्
सद्विरध्युषिता धात्री संपूज्येति किमम्दुदम्
कालायसं हि कल्याण कल्पते रस योगत:

अर्थात्

महापुरुषों के संसर्ग से स्थान ठीक उसी तरह पवित्र हो जाते हैं जैसे रस अथवा पारस के स्पर्श मात्र से लोहा सोना बन जाता हैं।

मूलत: पृथ्वी पूज्य या अपूज्य नहीं होती हैं। उसमें पूज्यता महापुरुषों के ससंर्ग से आती हैं। महापुरुष वे होते है जो संसार के प्रणियों के उपकारक बंधु है। उनके उपकारों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने और उस भूमि खण्ड पर घटित घटना की स्मृति बनाये रखने के लिए उस भूमि पर भव्य प्राणी निर्माण कार्य प्रारम्भ कर देते है तथा वहाँ तीर्थ क्षेत्र व गुरुकुल आदि की रचना करते हैं। संसार की सम्पूर्ण तीर्थ भूमियों या तीर्थ क्षेत्र संरचना में भक्तों की महापुरुषों के प्रति कृतज्ञता की भावना ही मूल कारण हैं।

तीर्थ हमारी सांस्कृतिक धरोहर एवं धार्मिक ऊर्जा के केन्द्र हैं। भारतभूमि अपने समग्र रूप में एक अनुपम तीर्थस्थली हैं। जहाँ कदम-कदम पर सभ्यता एवं संस्कृति के विविध रूपों के दर्शन होते है। हमारी संस्कृति में तीर्थ की कल्पना संरचना व महत्ता एक अलग ही महत्व रखती है। किसी ने ठीक ही लिखा है:-

जग में धर्म कला द्वय धारा, तीर्थ जिन शासन शान,
जब तक ये आदर्श देश में सूर्य चन्द्र के रहे विमान,
जब तक शोभित धर्मधरा पर सुख समृद्धि की बहती धार,
सदा वंद्य यह पावन वसुधा कर्म शांत हो अत: प्रणाम।

तीर्थ क्या है- तीर्थ शब्द तृ धातु से निकला है। जिसका अर्थ है जिसके द्वारा तरा जाय। आ. जिनसेन स्वामी ने आदिपुराण में लिखा है- जो इस अपार संसार समुद्र से पार करे, उसे तीर्थ कहते हैं।

तीर्थ स्थान उस स्थान को कहते है जहाँ तीर्थंकरों के गर्भ, जन्म अभिनिष्क्रमण, केवल ज्ञान व मोक्ष कल्याणक में से कोई कल्याणक अथवा किसी केवली, श्रुतकेवली, मुनिराज ने उस स्थान से मुक्ति को पाया हो।

जैन संस्कृति, तीर्थ परम स्थल सिद्ध क्षेत्र या अतिशय क्षेत्र,
मुक्ति मिले व सिद्ध भूमि है घटना हो तो अतिशय क्षेत्र।
कल्याणक हो जिस भूमि पर नमन करो योगत्रय लीन,
शिल्पकला युत उत्तम मनहर कला क्षेत्र वह पूज्य जमीन।

हमारे यहाँ तीन प्रकार के तीर्थक्षेत्र की अवधारणा है। सिद्धक्षेत्र- जिस स्थान विशेष से मुनिवरों ने शुक्ल ध्यान पूर्वक साधना करते हुए परमात्म पद मोक्ष का प्राप्त किया है वे सिद्ध क्षेत्र कहलाते है। जैसे-कैलाश, सम्मेदशिखर, गिरनार, चम्पा व पावापुरी आदि अनेक सिद्ध क्षेत्र।

कल्याणक क्षेत्र- ये वे क्षेत्र है जहाँ किसी तीर्थंकर का गर्भ, जन्म एवं दीक्षा या कैवल्य ज्ञान कल्याणक हुआ हो। जैसे- काकन्दी, कुण्डलपुर आदि।

अतिशय क्षेत्र-ये वे क्षेत्र है जहाँ किसी मूर्ति अथवा मन्दिर में कोई चमत्कार अथवा कोई घटना घटी है। जैसे श्री महावीरजी, चांदखेड़ी, मूडबद्री, पैठण महुआजी आदि। तीर्थक्षेत्र का महत्व एवं सुरक्षा की आवश्यकता:-

सिद्धक्षेत्र महातीर्थ पुराण पुरुषाश्रिते
कल्याण कलिते पुण्ये ध्यान सिद्धि प्रजापते

पूज्यपाद आचार्य ने ज्ञानार्णव ग्रंथ में लिखा है शलाका पुरुषों से प्रभावित कल्याणक स्थान पवित्र सिद्धक्षेत्र रुप महान तीर्थ का ध्यान करने से परमात्मपाद तथा स्वर्गीय वैभव की प्राप्ति होती है।

तीर्थक्षेत्र पूजक को पूज्य बनाने की कार्यशालाएँ है। यहाँ जाकर मानव कायिक, मानसिक और आत्मिक पापों का शमन करते हैं। तीर्थक्षेत्र वह स्थान हैं जहाँ जाने पर मनुष्यों की प्रवृत्ति संसार की चिन्ताओं से मुक्त होकर महापुरुष की भांति आत्म कल्याण की ओर होती हैं। तीर्थक्षेत्र एक अनूठी ऊर्जा का केन्द्र होते हैं, जिससे भक्तों के मन स्वत: ही उस पर्यावरण के अनुकूल परिवर्तित हो जाते हैं। वे भजन पूजन और अर्चन में ऐसे सराबोर हो जाते हैं। जिससे अंतरंग में अनूठी अध्यात्मिक चेतना जागृत होती है और

वे संसार के तनाव से मुक्त होते प्रतीत होते हैं।

स्वास्थ्य की दृष्टि से वहाँ का वातावरण स्वेच्छ एवं सुरम्य होता है जिससे व्यक्ति अपने को तरोताजा महसूस करता है। स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन रहता है। हमारे आध्यात्मिक, भौगोलिक एवं ऐतिहासिक ज्ञान में वृद्धि होती है। उन स्थलों से जुड़ी कला, संस्कृति, परम्परा आदि का ज्ञान होता है।

वस्तुत: तीर्थभूमि के मार्ग की रज उतनी पवित्र होती है कि उसके आश्रय से मनुष्य रज रहित अर्थात् कर्ममल रहित हो जाता है।

तीर्थ से मिलती है भवभ्रमण से मुक्ति
तीर्थ से मिलती है सम्पदा अविनाशी

तीर्थ क्षेत्रों के विकास व सरंक्षण में नारी की भूमिका-

जैन धर्म में नर और नारी दोनों को समान स्थान दिया गया है। जैन शास्त्रों में नारी की प्रशंसा धर्मसहचारिणी, रत्नकुक्षाधारिणी आदि विशेषताओं से की गई है। इतिहास में जैन महिलाओं द्वारा समाज तथा धर्म के लिए किये गये अनेक महान कार्य, वीरांगनाओं के शौर्य तथा आर्यिकाओं तथा श्राविकाओं द्वारा स्थापित आदर्शों के अनेक प्रमाण हमारे सामने हैं। समय-समय पर महिलाओं ने विभिन्न स्थानों पर मंदिर मठ, गुरुकुल सरोवर का निर्माण कर जैन धर्म की विविध रुपों में प्रभावना की है।

तीर्थक्षेत्रों के विकास एवं व्यवस्था में महिलाओं की भूमिका को हम तीन भागों में विभाजित कर उनके योगदान पर दृष्टिपात करेंगे।

1. तीर्थों के संरक्षण में आर्यिकाओं का द्वारा किये प्रेरणादायक कार्य

2. ऐतिहासिक नारियों द्वारा तीर्थ सरंक्षण एवं तीर्थ पर किये गये विकास कार्य

3. वर्तमान नारी समाज एवं जैन तीर्थों की प्रगति

तीर्थ संरक्षण में आर्यिकाओं का योगदान-

आँखो में यदि अरमान हो तो
आशियाना दूर नही
पंखो में यदि जान हो तो
तो आसमाँ दूर नहीं

तीर्थ संरक्षण में ऐसा ही जज्बा गणिनी आर्यिका ज्ञानमती जी माताजी के मन में तीर्थंकर भगवान की कल्याणक भूमियों को लेकर था। दृढ संकल्पी लोगों के सपने अवश्य साकार होते है। पू. माताजी के सपनों का पहला केन्द्र बनी भगवान शांति कुंथु अरनाथ की पावन कल्याणक भूमि हस्तिनापुर। माताजी की प्रेरणा से इस भूमि पर जम्बूद्वीप की रचना हुई। जम्बूद्वीप की सुन्दर रचना को देखकर हस्तिनापुर को धरती का स्वर्ग कहा जाने लगा। इसके पश्चात अयोध्या, कुण्डलपुर, काकन्दी, श्रावस्ती, प्रभासगिरी आदि सभी तीर्थंकर भगवान की जन्मकल्याणक भूमियों पर विकास व निर्माण कार्य पूज्य माताजी की प्रेरणा से हुए। वीरान होती ये भूमियाँ आर्यिका माताजी के सद प्रयत्नों से आबाद हो गई। यहीं नहीं मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र में पर्वत पर भगवान ऋषभदेव की 108 फुट ऊँची प्रतिमा का निर्माण कर आपने मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र का विश्व पटल पर ला दिया। पूज्य माताजी हमेशा कहा करती है- हमारी संस्कृति का परिचय प्रदान करने वाली ये भूमियाँ हमारी महान संस्कृति के जीवन्त स्मारक हैं। संरक्षण संवर्धन अवश्य होना चाहिए।

तीर्थरक्षण में पूज्य गणिनी आर्यिका ज्ञानमति के योगदान देखकर यही कहा जा सकता है कि पूज्य माताजी के चरण जिस तीर्थ पर पड़ते हैं वह आकाश की ऊँचाइयों को छूने लगता है और जिस मिट्टी को स्पर्श करती है वह सोना बन जाता है। जिस जंगल में चली जाती हैं वह स्वर्ग बन जाता है।

मैसूर विश्वविद्यालय की जैनालॉजी की अध्यक्ष डॉ. एम.एम.पद्मा ने आर्यिकाओं के योगदान पर कहा- इतिहास गवाह है कि मुनियों की तरह जैन सन्यासिनियों ने भी समाजसेवा, मंदिर निर्माण आदि में बराबर योगदान दिया। आर्यिका श्रेयांसमती माताजी ने भी मांगीतुगी में निरंतर तप साधना कर मांगीतुंगी तीर्थ के विकास हेतु निरन्तर प्रयास किये। साथ ही आदिवासियों के बीच शाकाहार का प्रचार कर जैन धर्म की बड़ी प्रभावना की।

आर्यिका स्वस्तिभूषण माताजी द्वारा भूगर्भ से प्रकट भगवान श्री मुनिसुव्रतनाथ की विशाल प्रतिमा हेतु विशाल जिन मंदिर के कार्य की प्रेरणा लगातार दी जा रही है।

इन आर्यिका रत्नों ने अपने महान कार्यों से समय की शिला पर जो पद चिन्ह अंकित किए हैं वे अमिट हैं, ये पदचिन्ह दीप स्तम्भों के सदृश्य स्त्री समाज का पथ प्रशस्त करते रहेंगे।

ऐतिहासिक नारियों द्वारा तीर्थों का संरक्षण एवं विकास कार्य में योगदान -

जैन धर्म के इतिहास का गुलदस्ता कई महान नारियों के समर्पण के फूलों से सजा है। सदियां बीत जायें इन नारियों के समर्पण का सौरभ कभी कम नहीं हो सकता। उनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व आज सम्पूर्ण नारी स के लिये आदर्श है। ऐसी ही नारियों के लिए किसी ने कहा है

सामने मंजिल हो तो रास्ता मत तोड़ना,
जो भी हो मन में सपना मत तोड़ना,
कदम कदम पर मिलेगी मुश्किलें
सितारे चुनने के लिये
कभी जमीन मत छोड़ना
कर्मभूमि पर फल के लिए
सबको श्रम करना पड़ता है
रब सिर्फ लकीरें देता है
रंग हमे भरना होता है।

आइये! जानें इन महान नारियों के योगदान को:- (1) इतिहास प्रसिद्ध कलिंग नरेश राजा खारवेल ने कुमारी पर्वत पर जिन मंदिर बनाकर जिन की प्रतिष्ठा की तब कलिंग साम्राज्ञी ने कुमारी पर्वत पर कल्पद्रुम

महामंडल विधान का भव्य आयोजन का संकल्प लिया। तथा दूर-दूर से पधारे श्रमणों हेतु 117 गुफाओं का निर्माण पर्वत पर करवाया। साथ ही मंदिर के खम्भों पर रत्न जड़वाने के बजाय मुनिवृन्दों से जिन स्त्रोतों की रचना करवाने का आग्रह किया।

उनका यह प्रयास जैन संस्कृति के प्रचार का सुन्दर माध्यम बना।

2. विंध्यगिरी श्रवणबेलगोला पर स्थापित भगवान बाहुबली की 57 फुट उत्तुंग दिगम्बर भव्य प्रतिमा भले ही गोमटेश्वर के नाम से अभिहित की जाती हो पर इस मूर्ति के निर्माण का ताना बाना माँ कालल देवी, गुल्लिका अज्जी एवं शिल्पी की अम्मा की सुकोमल वरदहस्त से बुना गया।

3.दक्षिण भारत की नारियों द्वारा तीर्थक्षेत्र की रक्षा के लिए अभूतपूर्व कार्य किये गये। चालुक्य सेनापति नागदेव की धर्मपत्नी अतिमव्वे ने जैन धर्म की प्रभावना हेतु 1500 हीरे जवाहात की मूर्ति स्थापित करवाइ तथा उनकी सुरक्षा, पूजा संरक्षण के हेतु प्रचुर धनराशि दान में दी। उनके द्वारा [illegible] गये धर्म प्रभावक कार्य हेतु उन्हें दान चिन्तामणि के नाम से इतिहास में जाना जाता है।

4. राजा विष्णुवर्धन की पत्नी शांतलादेवी भारतीय इतिहास की एक ऐसी अनुपम और अद्भुत पात्र हैं जिनकी कीर्ति कर्नाटक के शिलालेखों में लावण्य- सिंधु विद्या सरस्वती आदि अनेक विशेषणों से उत्कीर्ण है शांतलादेवी द्वारा अनेक जैन मंदिरों का निर्माण हेतु राज्याश्रय प्रदान किया गया। उनकी सुरक्षा हेतु गुरु के पाद-प्रक्षालन कर गांव के गांव दान दिये गये। कई सरोवरों का निर्माण करवाया गया।

5. सेनापति गंगराय की माता पोच्छिवे तथा पत्नी लक्ष्मी देवी द्वारा श्रवणबेलगोला पहाड़ पर जिन मंदिर का निर्माण करवाया गया। चन्द्रगिरी पर्वत पर सबसे बड़े मंदिर के रूप में जाना जाने वाला यह मंदिर आज भी उनके समर्पण की गौरवा गाथा कहता है।

6. श्रवणबेलगोला में बलाल द्वितीय के मंत्री चन्द्रमौली की पत्नी [illegible]यक्क ने श्रवणबेलगोला में मंदिर निर्माण तथा धनराशि मंदिर सुरक्षा हेतु प्रदान की। मंत्री ब्राह्मण धर्मावलम्बी था। यह इस बात का प्रमाण है कि अनेक महिलाओं का धर्म अपने पति से भिन्न था फिर भी उन्होंने बिना किस प्रतिशोध के धर्म को संरक्षण प्रदान किया।

7. गंगराजवंश की अनेक नारियों ने शासन कार्य की बागडोर के साथ अनेक जिन मंदिरों व सरोवरों का निर्माण करवाया। दक्षिण भारत की इन प्राचीन नारियों के अतिरिक्त वर्तमान में भी हमारी कई नारी रत्न ने तीर्थरक्षा में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

8. श्री पिसनहारी मढ़िया जबलपुर ने तीर्थंकर पद्मप्रभु की भव्य प्रतिमा के पाद में लेख से विदित होता है इस क्षेत्र को पोरवाल जाति की वृद्धि विधवा माता ने चक्की पीस-पीस कर अर्जित गाढ़ी कमाई लगाकर निर्मित किया।

9. माँ रत्नमा हेगड़े जिन्हें अभिनव कालल देवी के नाम से नवाजा गया। जिन्होंने प्राचीन संस्कृति के संरक्षण हेतु पुत्र वीरेन्द्र हेगड़े के माध्यम से जीर्णोद्धार करवाया। आपके द्वारा धर्मस्थल तीर्थ पर भगवान बाहुबली की 39 फुट उत्तुंग प्रतिमा जिन संस्कृति अनुपम उपहार है।

10. श्रीमती सरिता जैन चैन्नई- तीर्थक्षेत्रों के संरक्षण तथा प्राचीन तीर्थक्षेत्रों के जीर्णोद्धार में श्रीमती सरिताजी (अध्यक्ष-भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी) का नाम सभी बहनों के लिये उदाहरण है जिन्होंने तमिलनाडु के सैकड़ो मंदिरों का न केवल जीर्णोद्धार स्वयं करवाया वरन मंदिरों में व्यवस्था पुजारियों की नियुक्ति आदि भी उनके परिवार के सहयोग से की जाती है। वे हम नारी समाज के लिये आदर्श है।

11. ब्र. कमला बहनजी ने श्री महावीरजी में अत्यंत विपरीत परिस्थियों में आदर्श महिला विद्यालय की स्थापना कर कई बहनों के जीवन का न केवल उद्धार किया अपितु उस तीर्थक्षेत्र का नाम भी रोशन किया। ये तो कुछ ज्ञात प्रसिद्ध नारियों के उदाहरण है तीर्थ के विकास में कई अज्ञात नारियों का भी समर्पण है। उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है जिस नारी को हर पर उसकी नजाकत से तोला गया कोमलता से आँका गया, उस नारी ने देश की बागडोर संभाली, कानून की बागडोर संभाली आसमान की ऊँचाईयों को छुआ, शिक्षा प्रसार में सहयोग दिया, धर्मरक्षा, तीर्थरक्षा में अपने कदम बढ़ाये तो इन सबके पीछे उनके मन ने निरंतर यही भावना थी।

तीर्थ का विकास हो
पूर्ण सबकी आस हो,
अड़चनें सब दूर हो
हौसला भरपूर हो
ये कारवाँ थमे नहीं
बढ़े कदम रुके नहीं
धर्म की जयकार हो
तीर्थ का उद्धार हो

तीर्थों की प्रगति एवं व्यवस्था में महिलाओं की सहभागिता (सुझाव)

जैन तीर्थों के संरक्षण के लिये उपरोक्त संक्षिप्त विवरण से यह स्पष्ट है जहाँ नारी व्यक्ति, कुटुम्ब समाज की निर्मात्री है वहाँ धर्म व संस्कृति व सभ्यता की संवाहिका भी है। आदिकाल से अनपढ़ नारी भी गृहप्रबन्धक में सफल रही है और आज वह पूर्ण रूपेण सफल है। नारी के प्रबन्धन की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह घर के प्रत्येक सदस्य की आवश्यकता व उन्नति को ध्यान में रखकर कार्य करती है। यही नारी प्रबंधन का कायक्षेत्र बढ़ाकर तीर्थरक्षा में आगे आये तो यह एक सकारात्मक पहल होगी।

किसी कवि ने ठीक कहा है नारी जब बोलती है, इतिहास बदल देती है। नारी जब कार्य करती है तो इतिहास बना देती है।

तीर्थ की प्रगति में व्यक्तिगत स्तर पर किये जाने वाले कार्य:- तीर्थों की प्रगति के लिये हमें इन शब्दों को अपने आत्मसात करना होगा-

1. संकल्प 2. कर्तव्य 3. दान 4. जागरुकता 5. पर्यावरण सुरक्षा 6. खानपान शुद्धता 7. संस्कृति व धर्म की रक्षा।

संकल्प- सबसे पहले हम जैन धर्म की प्राचीन संस्कृति व धरोहर के

रुप में हमारे तीर्थों की वंदना का संकल्प ले। यह संकल्प हमें जो हमें तीर्थों से जोड़ेगा।

2. **कर्तव्य-** हम अपने परिवार के सदस्यों को तीर्थों के प्रति कर्तव्य को लेकर जागरुक करें। जैसे- तीर्थ संरक्षण, सुरक्षा, स्वच्छता आदि।

3. **दान-** किसी भी तीर्थक्षेत्र की सुरक्षा व्यवस्था बिना अर्थ के संभव नहीं। अत: अपनी आय का कुछ प्रतिशत तीर्थक्षेत्र के लिये अवश्य सुनिश्चित करें।

4. **जागरुकता-** आजकल हर तीर्थक्षेत्र पर यात्रियों की सुविधा हेतु प्रयास किये जाते हैं। हम एक जागरुक नागरिक की तरह व्यवस्था का सदुपयोग करें तथा जल को व्यर्थ न बहायें बिजली के दुरुपयोग पर ध्यान दें तथा परिवार के लोगों को भी प्रेरणा दें।

5. **पर्यावरण सुरक्षा-** पर्यावरण को सुरक्षित रखने के लिये कम से कम प्लास्टिक के सामान का उपयोग करें। प्लास्टिक की थैलियों व बिसलरी के बॉटलों का यत्र-तत्र न फेंके। पहाड़ों की वन्दना करते समय इधर-उधर बिखरे हुए ढेर पर्वत की पवित्रता को तो नष्ट करते है, साथ ही पर्यावरण जल, मिट्टी को भी दूषित करते हैं। आपके द्वारा उठाया गया यह कदम पर्यावरण रक्षा से सहकारी होगा।

6. **खान पान शुद्धता-** आधुनिक समय में उपलब्ध भोगोपभोग की सामग्री ने हमारी जीवन शैली को प्रभावित किया है। हम कम से कम तीर्थ क्षेत्रों अभक्ष्य खाने से बचें तथा जैन धर्म के सिद्धान्तों का पालन करें। जिससे हम जैन धर्म की प्रभावना करने में सहायक हों। अजैनी वर्ग के लिये अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करें।

7. **संस्कृति की रक्षा:-** राजस्थान में नई पावागिरी एक श्वेताम्बर तीर्थ है। जहाँ पर स्त्रीपुरुष के लिये पाश्चात्य वेशभूषा में घूमने पर पाबन्दी है। तीर्थस्थानों पर हम भारतीय वेशभूषा को प्राथमिकता दें। तीर्थक्षेत्रों को पर्यटक केन्द्र न बनायें। आपके द्वारा किये छोटे प्रयास तीर्थक्षेत्र को आत्मकल्याण व आत्म शांति के केन्द्र बनायेंगे।

यह हस्तौ च पादौ च मनों यस्य सुसचेतम्
दान मान तप: सेवी तीर्थ फलमश्तुते।

अर्थात्

जो व्यक्ति अपने हाथ पैर और मन को वश में करता है तथा तीर्थ क्षेत्रों का दान व सम्मान नहीं लेता अपितु स्वयं दान देता है वह वास्तव में तीर्थ यात्रा के फर्ज को प्राप्त करता है।

सामूहिक रूप से अथवा महिला संगठनों के माध्यम किये जाने वाले प्रयास

तीर्थ किसी भी समाज की सामाजिक एवं सांस्कृतिक धरोहर है। समाज के इतिहास को अक्षुण्ण एवं चिरस्थायी बनाने के लिये समाज के सभी सदस्यों का कर्तव्य है कि हमारे तीर्थंकरों, पुण्यपुरुषों, मुनियों का यशोगान करने वाले इन तीर्थक्षेत्रों की प्रतिष्ठा को कायम रखने का एक महान कार्य बड़ी तत्परता एवं लगन से करें। यह महान कार्य महिला संगठन बड़े सुनियोजित तरीके से कर सकते हैं। वर्तमान में प्रत्येक गाँव शहर में महिला समिति, संगठन, मण्डल का निर्माण हो चुका है। वे अपने स्तर पर कई कार्य संपादित कर रहे हैं। संगठनों के माध्यम से हम निम्नांकित कार्य करके तीर्थ क्षेत्र के विकास में सहयोग दे सकते हैं:-

1. कोई भी धार्मिक महोत्सव महिलाओं की भागीदारी के बिना संभव नहीं। इन धार्मिक महोत्सव में समीपस्थ तीर्थक्षेत्रों की चर्चा हो। जिससे महोत्सव में आई सभी बहनों में उस तीर्थक्षेत्र के प्रति श्रद्धा समर्पण की भावना आती है। जिससे दान की भावना को बल मिलता है। जो तीर्थों के संरक्षण के लिये अति आवश्यक है।

2. देश में चारो और फैले महिला मण्डल की/ग्रुप/ संगठन अपने समीपस्थ तीर्थक्षेत्र को गोद ले। वहाँ की व्यवस्था/ भोजनालय की स्वच्छता गुणवत्ता/ सफाई तथा जिनवाणी की सुरक्षा जैसे कार्य सामूहिक रूप से करेंगी तो सम्बन्धित तीर्थ हमेशा आबाद व गुलजार रहेंगे।

3. आजकल जन्मदिन, विवाह वर्षगांठ पर अनेक बड़े आयोजन होते हैं। उन समारोह में तीर्थक्षेत्र के लिए भी एक निश्चित राशि तय की जाये इससे उपस्थित लोगों में तीर्थों के विकास के प्रति रुचि बढ़ेगी एवं धार्मिक संस्कार बढ़ेंगे।

4. महिला संगठन किसी तीर्थ के जीर्णोद्धार हेतु पहल करें। उदाहरण के लिये नागालैण्ड की महिला सभा द्वारा बंगाल के एक प्राचीन मंदिर का जीर्णोद्धार स्वयं के खर्चे से करवाने का निर्णय लिया।

5. तीर्थक्षेत्रों पर निवास करने वाली महिलाओं के लिये रोजगार हेतु गृह उद्योग को बढ़ावा दिया जाये तथा सदस्यों के माध्यम से मार्केट उपलब्ध कराया जाये तो रोजगार के अभाव में होने वाले पलायन रुकेंगे। तीर्थक्षेत्र वीरान होने से बचेंगे।

6. महिला संगठन द्वारा तीर्थ क्षेत्र पर सामूहिक रूप से समय-समय पर विधान पाठ आदि धार्मिक कार्यक्रम सम्पादित किये जायें। जिससे भक्तिमय वातावरण बनता है। लोगों के जुड़ने से अर्थ व्यवस्था भी मज़बूत होती है।

7. महिला संगठन तीर्थक्षेत्र के मंदिरों में कार्यरत पुजारी अथवा किसी समर्पित कर्मचारी को तीर्थक्षेत्र पर जाकर सम्मानित अवश्य करें। जिससे उनका उत्साहवर्धन होगा इस तरह कर्मचारियों के सहयोग से निश्चित ही क्षेत्र का विकास होगा।

8. महिला संगठन साम्प्रदायिक सौहार्द्र को बनाये रखने में आगे आयें। समय-समय पर गोष्ठियों व सभाओं के माध्यम से यह संदेश दें कि हम और न टूटें। न तेरा पंथ, न मेरा पंथ बस जिनवर का पंथ। तीर्थक्षेत्र भी इस पंथवाद से प्रभावित हुए हैं जब हम सर्वधर्म मन्दिर में भगवान की आराधना करते हैं तो हम अपने ही तीर्थक्षेत्रों में अपने मन्दिरों की उपेक्षा न करें। सह अस्तित्व व उदार भावना से हम बढ़ते हुए विवादों को लगाम लगा सकते हैं।

9. ब्रह्मचारिणी बहनें भी तीर्थरक्षा में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सकती हैं। श्राविकाश्रम में साधना, अध्ययन तथा तीर्थस्थान में आने वाले

यात्रियों को प्रवचन/ भजन से सामूहिक रूप से बांध सकती है। जिससे तीर्थक्षेत्र में आने व्यक्ति को ज्ञानलाभ मिलेगा। वे मनोरंजन के अन्य साधन ढूंढने का उपक्रम नही करेंगे। क्षेत्रों की मर्यादा का पालन हो जायेगा। ब्र.डॉ. सविता जैन द्वारा शीतलतीर्थ विकास हेतु जो प्रयास किये जा रहे है वे सभी के लिये उदाहरण है।

10. वे महिला मण्डल जो तीर्थ रक्षा के लिए संकल्पित हैं अपने को तीर्थक्षेत्र रक्षा कमेटी मे रजिस्टर्ड करें ताकि दोनों के बीच तारतम्यता स्थापित हो। जिससे कार्यो को संपादित करने में आसानी हो।

11. तीर्थो पर सुरम्य वातावरण व पर्यावरणीय सुरक्षा हेतु वर्ष में एक वृक्षारोपण का कार्यक्रम आयोजन करें जिसके अंतर्गत अपने प्रियजनों के नाम से वृक्ष अवश्य लगाये। वे वृक्ष तीर्थंकर भगवान के कल्याणक वृक्ष हो तो उनसे जुड़ा श्रद्धा भाव भी जुड़ जाता है।

12. आर्यिका आदर्शमती माताजी की प्रेरणा से इन्दौर में हाथ का उद्योग की ईकाई का प्रारम्भ करने की योजना क्रियान्वित होने जा रही है। महिला संगठन ऐसी योजना को तीर्थक्षेत्र में प्ररम्भ करे तो वहाँ जरुरतमन्द परिवार को रोजगार भी मिलेगा व योत्रियों के आवागमन से मार्केट भी मिलेगा।

13. तीर्थरक्षा की योजना के अंतर्गत संगठन की महिलाओं में गुल्लक वितरित किये जाये उस राशि से आप जिस तीर्थ की सुरक्षा हेतु अपने हाथ बढ़ा रही है वही किसी एक योजना को लेकर वह राशि प्रदान कीजिये। जब तीर्थ पर कोई कार्य क्रियान्वित होता है तब खुले हाथ से दान देने हेतु लोग आगे आते है।

14. जिस तरह हम सतियों के जीवन-गाथा पर नृत्य नाटिकाएँ आयोजित करते है उसी तरह तीर्थक्षेत्रों के इतिहास, वहाँ होने वाली प्रभाव घटनाओं, तीर्थक्षेत्रों में योगदान देने वाली महिला रत्न के जीवन पर आधारित छोटी नृत्य नाटिकाओं का आयोजन समय-समय पर किया जाये तो उन महान नारियों के प्रति हमारी विनयांजलि भी होगी। वह दर्शकों में उन तीर्थो के प्रति श्रद्धा, रुचि भी वृद्धिगत होगी। जिससे वे तीर्थों पर केवल पर्यटन की दृष्टि से नहीं जायेंगे वरन श्रद्धा व समर्पण के साथ तीर्थवंदना करेंगे।

15.तीर्थरक्षा के साथ जिनवाणी सुरक्षा। पांडुलिपियों का संरक्षण आदि की जागरुकता भी समय समय संगठनो के माध्यम से की जाये। जिससे तीर्थ पर विराजमान साहित्यिक सम्पदा के वैभव को हम सुरक्षित रूप से नई पीढ़ी को सौंप सकें।

उपसंहार- हमारे पूर्वजों ने अमूल्य सांस्कृतिक वैभव पूज्य गुरुओं के आशीर्वाद व प्रेरणा से हमें प्रदान किया। उस अमानत की सुरक्षा उसके विकास की महती जवाबदारी नारी शक्ति के मजबूत कंधों पर है। संकीर्णता, मतभेद को त्यागकर अमूल्य धरोहर की सुरक्षा के लिये एकता से अपने कदम बढाने होंगे। जनसंख्या के अनुपात को देखते हुए एकता संगठन समर्पण व तन, मन, धन से कार्य करने की परम आवश्यकता है। और अंत में यही कहूँगी-

बहनों। आओ तीर्थ तुम्हें बुलाते हैं
स्वर्णमय अतीत की कथा तुम्हें सुनाते हैं
जीर्णोद्धार तीर्थों का कराने से
संस्कृति हमारी बच जायेगी
जय जिनेन्द्र की वाणी जब देवालय में गूँजेंगे
नई पीढ़ी यशोगान तुम्हारा गायेगी।
जीर्णोद्धार होगा तीर्थक्षेत्रों का
उद्धार तुम्हारा हो जायेगा।
जिनालयों पर फहराता केसरिया
गौरव गाथा तुम्हारी गायेगा।

श्री १००८ पार्श्वनाथ दिगंबर जैन आतिशय क्षेत्र काटी सावरगांव
त्यागी भवन का निर्माण कार्य भारत वर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमिटी सहयोग से पुरा हुआ
सर्वेक्षण करते हुये जिर्णोद्धार कमिटी के चेअरमन अनिल जमगे, दिपक शाहा,
अजित वडजाते मंदिर के अध्यक्ष हर्षवर्धन मेहता सचिव पद्मकुमार मेहता, गांधी उपस्थित थे !

णमोकार तीर्थ चाँदवड आचार्य श्री देवनंदी गुरुदेव के सानिध्य में
एंव प्रेरणा से भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी की और से
श्री १००८ चंद्रप्रभु दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र मांडल, ता.अमलनेर,जि.जलगांव
अध्यक्ष: सुनिल नानाभाई जैन, ट्रस्टी : प्रविण राजुलाल जैन,निखील जैन, इनको
यात्री निवास जिर्णोध्दार हेतू ३ लाख की धन राशी चेक व्दारा देते हुऐं !
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष : निलम अजमेरा, जिर्णोध्दार कमेटी चेअरमन : अनिल जमगे,
मंत्री : वैशाली दिदी, कार्यकारणी सदस्य: केतन ठोले एवं मयुर दगडे.

जैन तीर्थों के संरक्षण एवं विकास में युवाओं की भूमिका

शैलेन्द्र जैन सराफ, ललितपुर (उ.प्र.)

1) प्रस्तावना:- संसार की अनेक संस्कृतियो के बीच भारतीय संस्कृति का चरम लक्ष्य **सत्यं शिवं सुन्दरम्** युक्त मानवीय विचारणा रहा है। मानवता के विकास का इतिहास मानव संस्कृति के विकास का ही इतिहास है और यही विकास अभिव्यक्ति के विविध साधनों तथा रूपों में प्रतिफलित होकर मानवीय धरातल पर नव-निर्माण करता है। पर आज सांस्कृतिक क्षरण की बात उठायी जाती है। आस्थाओं के प्रतीक हमारे तीर्थक्षेत्र जो हमारी परम्पराओं और मान्यताओं की पूर्ति में सहायक होते है। जो हमें भव सागर से तिराने वाले होते है, हमारी संस्कृति और सभ्यता के द्योतक है। पर आज सामाजिक विघटन के कारण इन तीर्थ क्षेत्रों की अखण्डता खंडित हो रही है। आज हम जैन धर्म के अनुयायी होकर भी इतने पंथ-संप्रदाय में बंट चुके है, तब सोचने वाली बात यह है कि, मूल जड़ के नष्ट होने पर क्या पेड़ की शाखायें उपशाखायें अपना वर्चस्व व अस्तित्व बनाये रख सकती है। श्वेताम्बर-दिगम्बर की दीवार बहुत चौड़ी होती जा रही है। सम्मेदशिखरजी तीर्थ को लेकर कोर्ट में जो मुद्दा चला, जिस तरह राजनीति का सहारा लिया गया, उसमें जैनों के बिखराव का ही सूत्रपात हुआ। तब ऐसे में हम एकता की वह ताकत कहाँ से लाये जो एक बंद मुट्ठी में होती है। कहावत है कि बंधी बुहारी काम की और बिखर जाये तो खाड़ की। अर्थत् तीर्थों के संरक्षण व विकास के लिए एकता प्रथम सोपान है।

2) तीर्थ निष्ठा उन्नायक:-

तीर्थमपि स्वं जननं समुद्र त्रासित सत्वोत्तरण पथोग्नं।।

स्वयंभू स्तोत्र में आ. समन्तभद्र स्वामी कहते है कि जन्म मरण रूप डूबते हुए प्राणियों के लिए तीर्थों को तरण पथ बताया है। अर्थात् तीर्थ अत्यंत व्यापक सार्थक शब्द है। वे हमारी सांस्कृतिक धरोहर है। हमारी धार्मिक निष्ठा को तीर्थवंदना से वल मिलता है। विकारग्रस्त मन और रुग्ण तन के उपचार हेतु तीर्थ स्फूर्ति प्रदायक भी है। जब व्यक्ति तनावग्रस्त होता है। तब तीर्थक्षेत्रों का वातावरण उसके लिए सुखद अनुभूति प्रदान करता है। हमारी आशा और श्रद्धा को बढाने वाले तीर्थ आज खतरे की कगार पर है। सामाजिक विघटन के चलते नष्ट व विकृत होते तीर्थो से हमारी श्रद्धा और आस्था भी पंगु होती जा रही है।

3) तीर्थो का संरक्षण व संवर्धन:- तीर्थक्षेत्रों की महिमा को उद्घाटित करते हुए किसी कवि ने कहा है कि,

"जिनमत के जितने तीर्थ मानवता की भाषा
नर से नारायण होने की हो जिसमें अभिलाषा
वे आए इनकी छाया में निज को जरा उतारें
शिल्पकला, शिवकला, कला से जीवन धर्म निहारें।।"

आज भौतिकता की होड़ में मानव इस तरह हयस्त है कि उसे अपने कार्यो से ही अवकाश नहीं है। समर्थ गृहस्थ, क्षेत्रों के संरक्षण हेतु धन दान में देता है। दान देने के पीछे उसकी यशकामना, सामाजिक दबाव, कदाचित् धर्म भावना, और तीर्थों का विकास भी हो सकती है पर मात्र धन देने से तो तीर्थों का संरक्षण, संवर्धन, नहीं होता। दातार का कर्त्तव्य है कि वह अपने द्वारा दिये गये धन का सदुपयोग होते हुए भी देते। आज का दातार धन देने के पश्चात् तीर्थों पर संवर्धन संरक्षण के कर्त्तव्य बोध से भावनात्मक रूप से नहीं जुड़ता। आज व्यक्ति अपने पूर्वजों द्वारा निर्मित इन सांस्कृतिक धरोहरों का आकलन इसलिए भी नहीं करना चाहता क्योंकि वह बिना कमाये हुए पर अर्जित सम्पत्ति की तरह प्राप्त हो गए हैं।

सुरक्षा और व्यवस्था की दृष्टि से आज भी अनेक क्षेत्र उपेक्षित हैं। तीर्थक्षेत्रों के विकास और सुरक्षा हेतु अनेक कमेटियां भारतवर्षीय स्तर पर कार्य कर रही हैं, पर उन्हें उपेक्षित स्थलों पर भी ध्यान देना चाहिए। दूसरा विकल्प यह है कि प्रत्येक तीर्थक्षेत्र अपने समीप के क्षेत्रों के सभी मंदिरों का अवलोकन करे और उनमें समुचित व्यवस्था हो। तीर्थक्षेत्र की निधि का कुछ भाग समीप के मंदिरों की व्यवस्था में व्यय भी करना पड़ता है तो यह धर्मायतन की रक्षा हेतु आवश्यक है। धर्म के कार्यो में इतनी संकुचित वृत्ति नहीं होनी चाहिए कि हय जिन मंदिरों व तीर्थो के पदाधिकारी है, उन मंदिरों की सम्पत्ति का विनियोजन केवल उसी मंदिर या क्षेत्र हेतु करेगें। ऐसी मनोवृत्ति रखने पर वे क्षेत्र उनकी सम्पत्ति दूसरों के अधिकार में हो जायेगी। और यदि हमारे तीर्थ क्षेत्र सदैव ही हमारी निगरानी में रहते है तभी हम उनका संरक्षण व संवर्धन कर पायेगें।

4) विकास हेतु युवाओं की भूमिका:- तीर्थक्षेत्रों के संरक्षण व संवर्धन में युवाओं की बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। मैनेजमेन्ट ऑफ लाइफ को अपनाने वाला आज का युवा बहुत ही अच्छे मैनेजर साबित हो सकते है। इसलिये मेरा सोचना है कि क्षेत्रों की व्यवस्थायें युवा व्यक्ति के ही हाथ में होना चाहिए, जिससे वह समुचित व्यवस्थायें देख सकें। पर ध्यान रखे हमें क्षेत्रों को पिकनिक स्पॉट नहीं बनाना है। क्योंकि वे हमारे आध्यात्मिक विकास के केन्द्र बिन्दु है, सैर सपाटे के स्थल नहीं है। तीर्थों का सामूहिक उत्तरदायित्व नई पीढ़ियों को जोड़े रखने के लिए बहुत बड़ी भूमिका निभा सकते है। नई पीढ़ी की आवश्यकताओं, चिन्तन व कॅरियर को लेकर क्षेत्रों पर ऐसे गुरुकुलों व आश्रमों की व्यवस्था हो जो वर्तमान शैली के तो अनुरूप हो और उनमें सांस्कृतिक पुर हो। गुरुकुलों या अच्छे स्तर के स्कूल-कॉलेजों के होने से युवा कहीं अन्यत्र नहीं भटकेंगे और क्षेत्रों पर सामूहिकता अर्थात् भीड़ आदि होने से अराजकता को भी बढ़ावा नहीं मिलेगा और उनकी सुरक्षा का संकट बहुत हद तक कम हो सकता है।

अब जब हमें अल्पसंख्यक श्रेणी का लाभ उठाना है तो वह बिना एक जुटता के संभव नहीं है। एक जुटता हमारे भविष्य के लिए बहुत आवश्यक है नहीं तो हमारी स्थिति भी वही होगी जो एक रोटी के लिए लड़ती हुई बिल्लियों की हुई और लाभ तीसरे अर्थात् बंदर ने उठाया। और एकजुटता का पाठ यदि कोई पढ़ा सकता है एवं उसका नेतृत्व कोई कर सकता है वह युवा वर्ग ही है।

5) अभ्युदय की आकांक्षा जगे- आज भौतिकता की चमक से

प्रेरित होकर युवावर्ग तीर्थक्षेत्रों में जाने की बजाय किसी हिल स्टेशन या पिकनिक स्पार्टी पर जाना पसंद करता है तब लोगों को चाहिए वे स्वयं तीर्थक्षेत्रों की वंदना हेतु जायें व अपने परिवार, बच्चों में ऐसे संस्कारों का रोपण कर उन्हें प्रेरित करें कि उनमें तीर्थक्षेत्रों की वंदना हेतु आकर्षण हो, उनमें तीर्थों के प्रति उच्च भावना जाग्रत हो, कि ये तीर्थ हमारी धरोहर है। इनकी रक्षा, सुरक्षा व व्यवस्था और विकास का संपूर्ण दायित्व हमारे ऊपर है। जैसे हम अपने पूर्वजों की धरोहर को न केवल सुरक्षित रखते हैं वरन् उसके विकास के माध्यम से सदा-सदा के लिए अक्षुण्ण बनाने का प्रयास करते है। वैसे ही हमें क्षेत्रों के विकास के विषय में सोचना चाहिए क्योंकि युवाओं में ही जितना मानसिक बल होता है उतना ही शारीरिक बल। यही कारण है कि दुनिया में जो भी बड़ी क्रान्तियां या आंदोलन हुए वे सभी युवाओं के बल पर हुए।

कुरीतियों के निवारण द्वारा भी तीर्थों के विकास व संवर्धन को पुष्ट किया जा सकता है। आज का युवा वर्ग शिक्षा के क्षेत्र में बहुत अग्रणी है। तर्क-वितर्क की शैली व यांत्रिक गतिविधियों द्वारा कहाँ किस तरह विकास की आवश्यकता है और इसे कैसे किया जाये यह उसे भली-भांति पता है। इसलिये तीर्थक्षेत्रों को प्रगति की ओर अग्रसर कर कैसे विकसित व संरक्षित किया जाये यह युवा के अलावा और कौन समझ सकता है।

6) संस्कृति संरक्षण व युवावर्ग- इतिहास इस बात का साक्षी है कि जब कभी देश पर संकट आया तब उसे दूर करने के लिए युवाओं ने अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। अर्थात् युवा वर्ग जब कुछ ठान लेता है तब उसे कोई रोक नहीं सकता। क्या व्यक्तिगत प्रतिभा और सामर्थ्य इतिहास को नहीं मोड़ सकते? व्यक्तिगत प्रतिभा और सामर्थ्य से मोड़ मिलते है इसके उदाहरण रुप महात्मा गांधी, भगतसिंह, डॉ. अबम्डेकर आदि कई नाम हैं। ऐसे में वह एक व्यक्ति केवल व्यक्ति नहीं रह जाता है वह अधिकांश जनमानस का प्रतीक हो जाता है, जहाँ सामान्य जन की सृजनशीलता प्रतिफलित होने लगती है और इस प्रकार उसकी प्रतिभा पूरे समाज का संस्कार वन जाती है, तब वह एक शक्ति के रुप में आता है। तो आज इस संकट के समय अर्थात् जब बात तीर्थों की रक्षा की हो तो हमें अब एक जुट होकर समन्वय के साथ संरक्षण करना ही होगा, अन्यथा वैसे भी हमारे हाथ से फिसलन की भांति सब कुछ निकलता जा रहा है और यदि हम सतर्क नहीं हुए तो जो बचा है उसे भी खो देते। अब फिसलन् की काई पर विवेक से पांव जमाने की आवश्यकता है, आज के युवा वर्ग उसकी शक्ति को सही दिशा देने की आवश्यकता है।

7) व्यापक प्रयत्नों की आवश्यकता- हमारे तीर्थक्षेत्र गिरनार जी हमारी एक जुटता की कमी अर्थात् हमारे बिखराव के कारण ही हमसे लगभग निकल गया वैसे ही सम्मेद शिखर जी भी दिगंबरों, बीसपंथी, तेरापंथी के वर्गों में विभाजित होकर टूटता जा रहा है। अभी हम टूटे है, फिर कोई शहरी शक्ति आकर प्रहार करेगी और हमारे अस्तित्व को ही समाप्त कर देगी। हमारे नियम अर्थात् हमारे मतों में भिन्नता भले ही हो पर हमारे मन में बिखराव नहीं आना चाहिए क्योंकि यदि मन में बिखराव आता है तब हमें बिखरने से कोई नहीं रोक सकता और इस बिखराव को युवा वर्ग ही अपने नेतृत्व से रोक सकता है।

तीर्थों की सुरक्षा और संवर्धन की बागडोर भी हमें उन्हीं के हाथों में सौंपना चाहिए जो पदलिप्सा से दूर किंतु कार्य क्षमता में निपुण हो। आज ऐसे व्यक्ति क्षेत्रों की सुरक्षा, व्यवस्था में पद पर आसीन होते हैं (कई लोग) जो जैन धर्म के जैनत्व नियम भी वे पालन नहीं करते और समाज उन्हें क्षेत्रों के प्रमुख व्यक्तित्व का चोला पहना देती है।

कहा जाता है कि प्राचीन समय में मंदिरों आदि की भी सुरक्षा और व्यवस्थायें उन्हीं के हाथों में दी जाती थी। जो वास्तव में जैनत्व को धारण करता था। विजातीय व्यक्ति (शिल्पी) भी भगवान की मूर्ति निर्माण करते समय जैनत्व के नियम धारण करता था फिर कही जाकर पत्थर को भगवान रूप में गढ़ पाता था। फिर बिना नियम धर्म वाला व्यक्ति क्या मंदिरो, तीर्थों को सुरक्षित और व्यवस्थित कर पायेगा। इसलिए व्यास्थापक को सर्वप्रथम नियम धर्मी होना चाहिए।

मंदिरों की सुरक्षा और व्यवस्था हेतु पूर्ण नियमावली होनी चाहिए कि मंदिर कितने बजे खुलेगा, बंद होगा। अभिषेक प्रक्षालन आदि का भी समय निश्चित हो, समय की निश्चिता के अभाव में वेदी का मुख्य द्वार लेवे समय तक खुला रहता है जो कि सुरक्षा और व्यवस्था दोनों ही दृष्टि से अनुचित है।

8) उपसंहार- आज मानवीय अस्मिता रूप बिखरती संस्कृति को बचाने के लिए हमें संकल्पित होना ही होगा, क्योंकि जब व्यक्ति या युवा संकल्प करता है तो वह हिमालय की भाँति अटल हो जाता है। जगत की कोई शक्ति, कोई प्रलोभन उसे अपने स्थान से डिगा नहीं सकता। आज विदेशों में भारत का जो गौरव है, मान-सम्मान है वह उसके वैभव एवं ऐश्वर्य के कारण नहीं अपितु संस्कृति के कारण है। तब हमें भारत के गौरव को बचाने के लिए तीर्थक्षेत्रों को सुरक्षित करना ही होगा। युवाओं अब तुम्हें उठना ही होगा क्योंकि धीरज का धर्म चुक गया है। तीर्थक्षेत्र हमारी संस्कृति की सप्राणता के प्रतीक हैं जिन्हें हमें नष्ट होने से बचाना ही होगा। एक आस्था की और विश्वास की मशाल लिए दूर करना होगा लोगों के अन्दर विद्यमान अंधकार को बनाये रखा तो सब कुछ नष्ट हो जायेगा और हम कुछ नहीं कर पायेंगे। अपने अंदर एक विश्वास, एक संकल्प पैदा करें कि जो कुछ बचा है उसे जरूर संरक्षित व विकसित करेंगे। क्योंकि कितनी भी संस्कृति विघटन की बात कही गई हो या व्याघात आये हो या संस्कारों को ध्वस्त करने के प्रयास हो, श्रद्धा और आस्था व विश्वास के प्रतीक ये तीर्थ क्षेत्र हमारी चेतना शक्ति बनकर हमें युगबोध देते रहे है। तभी तो कहा गया है सुप्रसिद्ध गीत "सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा" कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी। यह "कुछ बात" ही हमारी सांस्कृतिक चेतना है जो निरंतर क्रियाशील रहकर हमें संस्कारों का बोध कराती है। और हम विश्वास और उत्साह से भर जाते हैं कि "हम हारे तो क्या, मैदान से भागे तो नहीं, फिर खेलेंगे और एक न एक दिन हमारी जीत होगी, अवश्य होगी।"

और यह जीत तभी होगी जब हम संकल्पित होगें।

"हो गई पीर पर्वत सी पिघलनी चाहिए
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए
आज यह दीवार, परदों की तरह हिलने लगी
शर्त लेकिन थी कि ये बुनियाद हिलनी चाहिए
सिर्फ निबंध लिखना, मेरा मकसद नहीं है

★★★★

पांडुलिपि संरक्षण एवं म.प्र. के जैन शास्त्र भंडार

डॉ. अनुपम जैन,इन्दौर

किसी राष्ट्र के स्वर्णिम अतीत की स्मृतियों का संरक्षण एवं उन्हें यथावत् आगामी पीढ़ी को हस्तांतरित करना वर्तमान पीढ़ी का दायित्व है। वर्तमान में समृद्ध अतीत के नाम पर पश्चिम के पास कुछ विशेष नहीं है, किन्तु हम भारत के निवासियों को इस बात का सौभाग्य प्राप्त हुआ है कि वर्तमान में हम भले ही विकासशील हों, किन्तु अतीत में हम समृद्धि के चरम बिन्दु पर पहुँच चुके थे। साहित्य, संगीत, कला एवं विज्ञान के क्षेत्र में भारतीय मनीषियों का अवदान विश्व में प्रसिद्ध है और यह विपुल ज्ञान प्राचीन पांडुलिपियों के रूप में अनेक झंझावातों को झेलता हुआ हमें अल्प मात्रा में ही सही, आज भी उपलब्ध है।

1988–1990 में INTACH द्वारा कराये गये एक सर्वेक्षण के आधार पर भारत में लगभग 50,00,000 (पचास लाख) पांडुलिपियॉ हैं। इसके अतिरिक्त योरोपीय देशों में 60,000, एशियाई एवं दक्षिण एशियाई देशों में 1,50,000 भारतीय पांडुलिपियॉ उपलब्ध हैं। पांडुलिपियों के सूचीकरण की स्थिति भी ज्यादा अच्छी नहीं है। क्योंकि 2003 तक भारत में मात्र 10 लाख पांडुलिपियों के नाम सूचीपत्रों में दर्ज हो सके।[1]

राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन द्वारा अपनी स्थापना 7 फरवरी 2003 से 31.12.2013 तक 38, 89,000 पांडुलिपियों का सूचीकरण किया जा चुका था एवं यह सिलसिला सतत जारी हैं[2]। मिशन के निदेशक ने 2014 में यह अनुमान व्यक्त किया था कि भारत में लगभग 1,00,00,000 (एक करोड़) पांडुलिपियॉ हैं एवं इस प्रकार भारत सर्वाधिक पांडुलिपियों को संरक्षित करने वाला दुनियां का प्रथम देश है।

जैन धर्म के 24 तीर्थंकरों एवं महान जैनाचार्यों का जन्म भारत में ही हुआ एवं यहीं उनकी साधना भूमि रही। फलत जैन धर्मानुयायी सम्पूर्ण भारत में फैले हैं। जैन धर्मानुयाइयों के दैनिक षट्कर्म निम्नवत् बताये गये हैं :

देवपूजा गुरोपास्ति स्वाध्याय संयमस्तपः।
दानं चेति गृहस्थाणां षट्कर्माणि दिने दिने।।

जैन धर्म के अनुयायी गृहस्थों के दैनिक षट्कर्मों में आराध्य देव तीर्थंकरों की पूजा, निर्ग्रंथ दिगम्बर गुरूओं की उपासना, स्वाध्याय, संयमित जीवन, तत्पश्चरण एवं दान सम्मिलित हैं। इन षटकर्मों में स्वाध्याय सम्मिलित होने के कारण श्रावकों की प्राथमिक आवश्यकताओं में परम्पराचार्यों द्वारा प्रणीत शास्त्र सम्मिलित हैं। क्योंकि स्वाध्याय का अर्थ परम्पराचार्यों द्वारा प्रणीत ग्रंथों का नियमित अध्ययन है, फलतः जैन उपासना स्थलों (जिन मंदिरों) के साथ स्वाध्याय के लिए आवश्यक शास्त्रों का संकलन एक अनिवार्य आवश्यकता बन गई। प्राचीन काल में मुद्रण की सुविधा उपलब्ध न होने के कारण श्रावक प्रतिलिपिकार विद्वानों की मदद से शास्त्रों की प्रतिलिपियॉ कराकर मंदिरों में विराजमान कराते थे। जैन ग्रंथों में उपलब्ध कथानकों में ऐसे अनेक प्रसंग उपलब्ध हैं जिनमें व्रतादिक अनुष्ठानों की समाप्ति पर मंदिरजी में शास्त्र विराजमान कराने अथवा भेंट में देने का उल्लेख मिलता है। विशिष्ट प्रतिभासम्पन्न पंडितों को उनके अध्ययन में सहयोग हेतु श्रेष्ठियों द्वारा सुदूरवर्ती स्थानों से शास्त्रों की प्रतिलिपियॉ मंगवाकर देने अथवा किसी शास्त्र विशेष की अनेक प्रतिलिपियॉ कराकर तीर्थयात्राओं के मध्य विभिन्न स्थानों पर भेंट स्वरूप देने के भी उल्लेख विद्यमान हैं।

जैन परम्परा में प्रचलित इस पद्धति के कारण अनेक मंदिरों के साथ अत्यंत समृद्ध शास्त्र भंडार भी विकसित हुए। ज्येष्ठ शुक्ला पंचमी जिसे **श्रुत पंचमी** की संज्ञा प्रदान की जाती है, के दिन इस शास्त्रों की पूजन, साज–संभाल की परम्परा है। शास्त्र के पन्नों को क्रमबद्ध करना, नये वेष्ठन लगाना, उन्हें धूप दिखाना आदि स्वस्थ परम्पराऍ शास्त्र भण्डारों के संरक्षण में सहायक रहीं। यही कारण है कि मध्यकाल के धार्मिक विद्वेष के झंझावातों एवं जैन ग्रंथों को समूल रूप से नष्ट किए जाने के कई लोमहर्षक प्रयासों के बावजूद आज कर्नाटक, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थ मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, बिहार आदि के अनेक मंदिरों, स्थानकों में दुर्लभ पाण्डुलिपियों को समाहित करने वाले सहस्त्राधिक शास्त्र भंडार उपलब्ध हैं। जैन शास्त्र भंडारों से हमारा आशय उन शास्त्र भंडारों से है जिनकी देखभाल, सार–सम्हाल एवं नियंत्रण जैन समुदाय के व्यक्तियों अथवा संस्थाओं के पास है। यह आवश्यक नहीं कि ऐसे भंडारों में केवल जैन ग्रंथ ही हों मैंने स्वयं जैन शास्त्र भंडारों में अनेकों दुर्लभ जैनेतर ग्रंथों को देखा है। इसका कारण शायद तुलनात्मक अध्ययन की परम्परा रही हो। जैन आचार्यों एवं प्रबुद्ध श्रावकों की साधना का प्रमुख लक्ष्य आत्मसाधना रहा है। यद्यपि जैन परम्परा स्वयं के तपश्चरण के माध्यम से कर्मों की निर्जरा कर आत्मा से परमात्मा बनने में विश्वास करती है, तथापि आत्मसाधना से बचे हुए समय में

जन कल्याण की पुनीत भावना अथवा श्रावकों के प्रति वात्सल्य भाव से अनुप्राणित होकर जैनाचार्यों ने लोक–हित के अनेक विषयों पर विपुल ग्रंथ राशि का सृजन भी किया है। फलतः गणित, ज्योतिष, आयुर्वेद, व्याकरण, वास्तुशास्त्र आदि विषयों की सहस्त्रों पांडुलिपियाँ जैन भंडारों में संरक्षित हैं।

जैन पांडुलिपियों के मामले में भारत में सर्वाधिक पांडुलिपियाँ राजस्थान एवं गुजरात में हैं किन्तु म.प्र. भी अधिक विपन्न नहीं है। हमने राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन के तहत जो सर्वेक्षण किया है उसके अनुसार 31.12.16 तक म.प्र. के 51 जिलों में 1,48,377 पांडुलिपियाँ हैं। इनका विस्तृत विवरण निम्नवत् है।

मध्य प्रदेश में उपलब्ध पाण्डुलिपियों का जिलेवार सर्वेक्षण

31.12.2016 की स्थिति

क्र.	जिले का नाम	जैन भण्डार		जैनेतर भण्डार		कुल पाण्डुलिपियाँ		पाण्डुलिपि भंडारों के स्थान
		भण्डार	पाण्डुलिपियाँ	भण्डार	पाण्डुलिपियाँ	भण्डार	पाण्डुलिपियाँ	
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1	आगर	3	2433	0	0	3	2433	सुसनेर, नलखेड़ा
2	अलीराजपुर	0	0	0	0	0	0	–
3	अनूपपुर	0	0	2	170	2	170	अमरकंटक
4	अशोकनगर	7	2366	0	0	7	2366	अशोकनगर, मुंगावली, चन्देरी, गंज
5	बड़वानी	3	218	0	0	3	218	बड़वानी, अजंड, बावनगजा
6	बैतूल	3	177	3	284	6	461	बैतूल, मुक्तागिरी, आठनेर
7	भिण्ड़	19	1661	1	14	20	1675	भिण्ड, फूप, मेहगांव, अटेर, उमरि, बरासौ, मौ, अमायन
8	भोपाल	3	1089	5	839	8	1928	भोपाल
9	बुरहानपुर	1	183	0	0	1	183	राजपुरा
10	बालाघाट	0	0	0	0	0	0	–
11	छतरपुर	20	2792	11	2328	31	5120	घुवारा, भगवां, खजुराहो, द्रोणगिरी, बकस्वाहा, नैनागिर, बम्होरी, सुनवाहा, मड़देवरा, दरगुवां, सटई, छतरपुर, बड़ामलहरा, धुबेला, बिजावर
12	छिन्दवाड़ा	4	138	0	0	4	138	छिन्दवाड़ा, चौरई, मोहगांव, सौंसर
13	दमोह	17	507	18	1951	35	2458	कुण्डलपुर, दमोह, पटेरा, हटा, बांदकपुर, जवेरा, चोपडा
14	दतिया	7	1450	12	1640	19	3090	सोनागिर, दतिया
15	देवास	16	1626	1	81	17	1707	लोहारदा, सतवास, खातेगांव, नेमावर, हाटपीपल्या, पानीगांव, सोनकच्छ, बागली

16	धार	11	1910	1	107	12	2017	धार, बाकानेर, सुसारी, कुक्षी, लोहारी, डेहरी, मनावर, नालछा, मोहनखेड़ा
17	डिन्डोरी	0	0	0	0	0	0	–
18	गुना	8	842	8	2224	16	3066	गुना, बजरंगगढ़, मतामूडरा, आरौन, साढोरा, राधवगढ़
19	ग्वालियर	31	6749	7	671	38	7420	ग्वालियर, डबरा, भितरवार, करहिया
20	हरदा	1	154	0	0	1	154	हरदा
21	होशंगाबाद	3	283	0	0	3	283	सिवनी मालवा, इटारसी
22	इन्दौर	43	9041	10	287	53	9328	इन्दौर, बिजलपुर, बनेड़ियाजी, सुमठा, महू,
23	जबलपुर	26	2787	1	1112	27	3899	जबलपुर, बरेला, पाटन, कटंगी, सिहोरा, वर्गी, पनागर, गढ़ा, चरगुआँ, सुनवारा, पथरिया
24	झाबुआ	3	145	0	0	3	145	राणापुर, थांदला, झाबुआ
25	कटनी	6	469	0	0	6	469	कटनी, बहोरीबंद तिवरी
26	खण्डवा (पूर्व निमाड़)	4	163	0	0	4	163	सिद्धवरकूट, खण्डवा
27	खरगोन (प. निमाड़)	10	515	0	0	10	515	बड़वाह, सनावद, पीपलगोंद, साठकूर, मण्डलेश्वर, महेश्वर
28	मण्डला	2	36	1	257	3	293	नैनपुर, मण्डला
29	मंदसौर	13	1286	1	989	14	2275	मंदसौर, सीतामउ, गरोठ, भानपुरा
30	मुरैना (मोरेना)	11	626	0	0	11	626	अम्बाह, मुरैना, मोरा, पोरसा, सिहोनियाँ
31	नरसिंहपुर	6	252	1	4	7	256	नरसिंहपुर, गोटेगाँव, गाडरवारा, तेंदूखेडा
32	नीमच	1	205	2	264	3	469	नीमच, भादवामाता

4

33	पन्ना	5	199	1	10	6	209	पन्ना, इटावाखास, ककरहेरी, सलेहा
34	रायसेन	7	396	0	0	7	396	पठारी, बाड़ीबरेली, सिलवानी, बेगमगंज, गैरतगंज
35	राजगढ़	3	97	0	0	3	97	ब्यावरा, सारंगपुर
36	रतलाम	11	14659	2	571	13	15230	रतलाम, डेलनपुर, जावरा
37	रींवा	1	92	2	387	3	479	रींवा
38	सागर	67	24031	54	8838	121	32869	अमरमऊ, शाहगढ़, बण्डा, बीला, हीरापुर, कर्रापुर, दलपतपुर, नौगांव, पिडरूवां, देवरीकलां, गढ़ाकोटा, ढाना, मालथोन, सिहोरा, टड़ा, केसली, महाराजपुर, सागर, तिगोड़ा, बरायठा, खुरई, उजनेठ, बांदरी, बीना, खिमलासा, जैसीनगर, शाहपुर, तिवरी, जैतपुर, मण्डी बामौरा, बरा
39	सतना	4	202	15	5031	19	5233	नागोदा, सतना, रामवन, चित्रकूट
40	सीहोर	6	720	0	0	6	720	कसवा, आष्टा, इच्छावर, रनायल, सिहोर
41	सिवनी	4	322	0	0	4	322	सिवनी, छपारा, लखनादौन
42	सिंगरौली	0	0	0	0	0	0	–
43	शहडोल	0	0	5	138	5	138	शहडोल, सोहागपुर, घुटवार
44	शाजापुर	4	805	3	455	7	1260	शाजापुर
45	श्योपुर	1	100	0	0	1	100	श्योपुरकला

5

46	शिवपुरी	29	1535	4	39	33	1574	नरवर, मगरौनी, कोलारस, खनियाधाना, भोती, रन्नौद, करैरा, पोहरी, सिरसौद, परिच्छा, शिवपुरी, बामौरकलां
47	सीधी	1	82	0	0	1	82	सीधी
48	टीकमगढ़	54	2397	18	782	72	3179	बड़ागांव, टीकमगढ़, दरगुवां, लार, डुंडा, अहारजी, कुडीला, भेलसी, खरगापुर, मलगुआं, हटा, एरौरा, कन्नपुर, बल्देवगढ़, ढोंगा, बम्हौरी, चन्देरा, पपौरा, मंजना, सिमराखुर्द, मवई, बंधा, दिगौड़ा, कारी, पठारी, निवई, लिधौरा, कंजना, मोगना, मढ़ियाजी, गोर, मोहनगढ़, जतारा, मालपीया, दुमदुमा, बछोड़ा, सकेराभंडारन, पृथ्वीपुर, टेहरका, नारायणपुरा, अजनोर, पठा, भितरवार, ओरछा, बिरौरा, दरगायखुद
49	उमरिया	0	0	0	0	0	0	
50	उज्जैन	10	7864	6	22723	16	30587	बड़नगर, उज्जैन
51	विदिशा	6	2577	0	0	6	2577	विदिशा, गंजबासौदा, सिरोंज
	कुल जिले 51	**495**	**95218**	**195**	**52196**	**690**	**147414**	

6

सारांश : कुल भण्डार – 690 कुल पाण्डुलिपियाँ – 1,47,414

यहाँ यह दृष्टव्य है कि म.प्र. में 495 भण्डार जैन हैं एवं उनमें लगभग 65% पांडुलिपियां सुरक्षित हैं। 195 जैनेतर भंडारों में शासकीय, अर्द्धशासकीय एवं विश्व विद्यालयों के संग्रह भी सम्मिलित हैं। जहाँ जैन भण्डारों में 96181 पांडुलिपियां संरक्षित है वहीं जैनेतर समस्त भंडारों में मात्र 52196 पांडुलिपियाँ ही हैं। ये आंकड़े जैन समुदाय के शास्त्र संरक्षण में दिये योगदान को प्रतिबिम्बित करते हैं। 51 जिलों में भी अलीराजपुर, बालाघाट, डिन्डोरी, सिंगरौली एवं उमरिया पांडुलिपिविहीन हैं।

अनूपपुर जिला ऐसा है जहाँ एक भी जैन भंडार तो नहीं है किन्तु एक जैनेतर भंडार जरूर है।

यहाँ यह भी दृष्टव्य है कि आगर–मालवा, अशोकनगर, बडवानी, बुरहानपुर, छिंदवाडा, हरदा, होशंगाबाद, झाबुआ, कटनी, खण्डवा, खरगोन, मुरैना, रायसेन, राजगढ़, सीहोर, सिवनी, श्योपुर, सीधी एवं विदिशा नामक 19 जिले ऐसे है जिनमें केवल जैन शास्त्र भंडार ही मिले है। यदि जैन मन्दिरों से जुडे शास्त्र भंडार या जैन समाज द्वारा संरक्षित शास्त्र भंडार न होते तो उक्त 19 मिलकर मध्यप्रदेश के 24 जिले पांडुलिपिविहीन होते।

यह परिणाम अंतिम है ऐसा नहीं। सभी 51 जिलों में कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ, इन्दौर की टीम सतत् भ्रमण करती है एवं जहाँ भी सूचना मिलती है वहाँ के भंडार का सर्वेक्षण, सूचीकरण एवं संरक्षण किया जाता है। यदि आपके मन्दिर का आज तक सूचीकरण नहीं हुआ है तो आप लेखक को इस सन्दर्भ में सूचित कर यह कार्य करवा सकते है। क्या पता आपके भंडार में ही कोई दुर्लभ कृति रखी मिल जाये? अधिकांश शास्त्रों की खोज ऐसे ही अचानक हुई है।

स्पष्टतः सागर जिला 32869 पांडुलिपियों के माध्यम से सर्वाधिक समृद्ध है किन्तु इसका श्रेय अनेकान्त ज्ञान मन्दिर, बीना को है। इसके संस्थापक ब्र. संदीप जी 'सरल' जी ने अपने जीवन को इस पुनीत कार्य हेतु समर्पित किया। उन्होंने देश के विविध अंचलों में जाकर मन्दिरों/मठों में असुरक्षित अवस्था में पड़ी पांडुलिपियों को न केवल सहेजा, अपितु उनका भौतिक संरक्षण एवं उनका सूचीकरण भी किया। फलतः दिनांक तक 31.12.16 तक अनेकान्त ज्ञान भंडार में 15,522 पांडुलिपियों का संरक्षण/सूचीकरण हो चुका है एवं कई हजार पांडुलिपियों का सूचीकरण अभी करना शेष है।

म.प्र. के शास्त्र भंडारों में मिली कतिपय अप्रकाशित दुर्लभ पांडुलिपियों के चित्र हम यहाँ प्रकाशित कर रहे हैं।

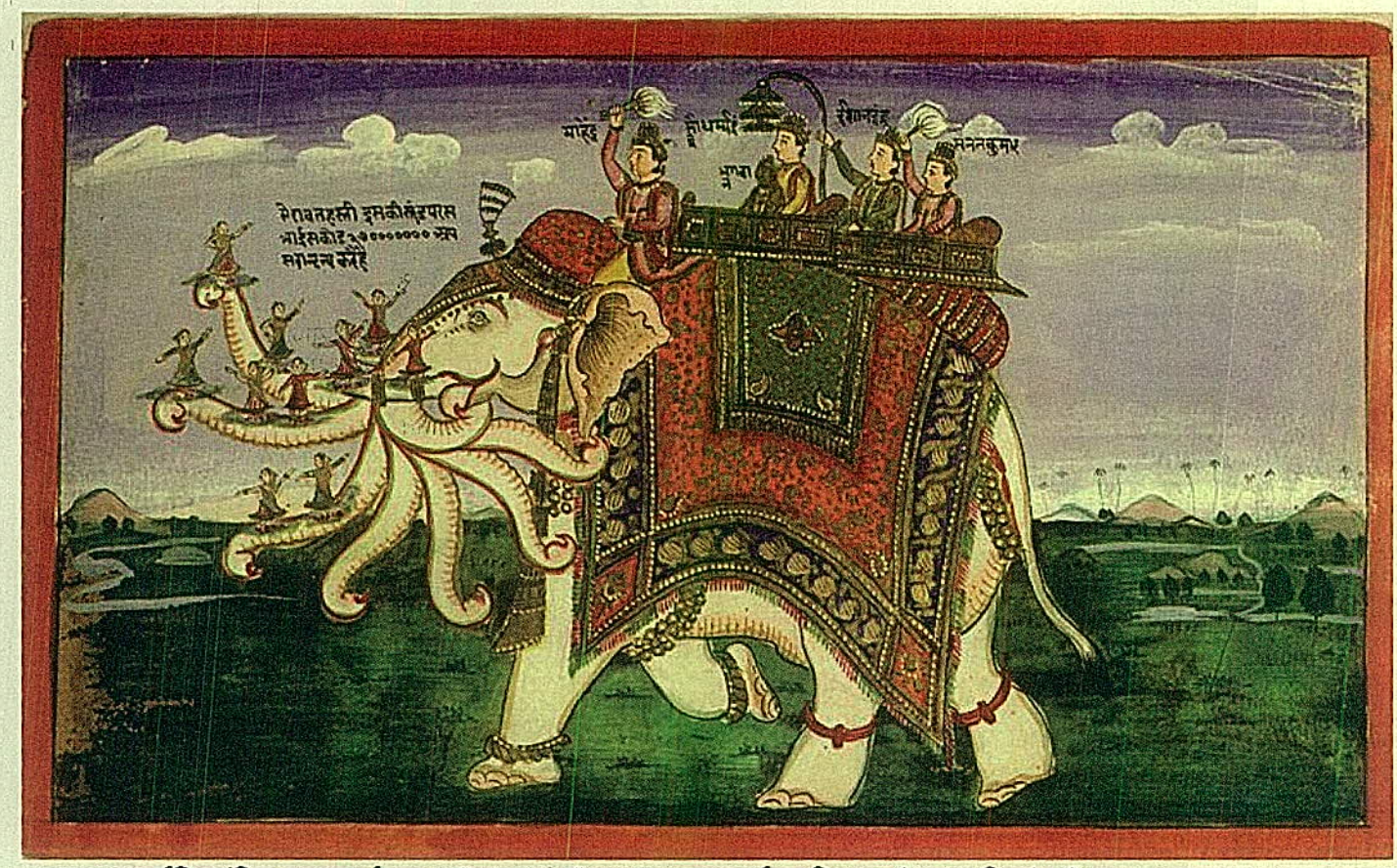

स्वर्णचित्रांकित तत्वार्थसूत्र की भाषा टीका सम्यकग्दर्शनचन्द्रिका (अप्रकाशित), विक्रम सम्वत 1977
कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ, इन्दौर में संरक्षित।

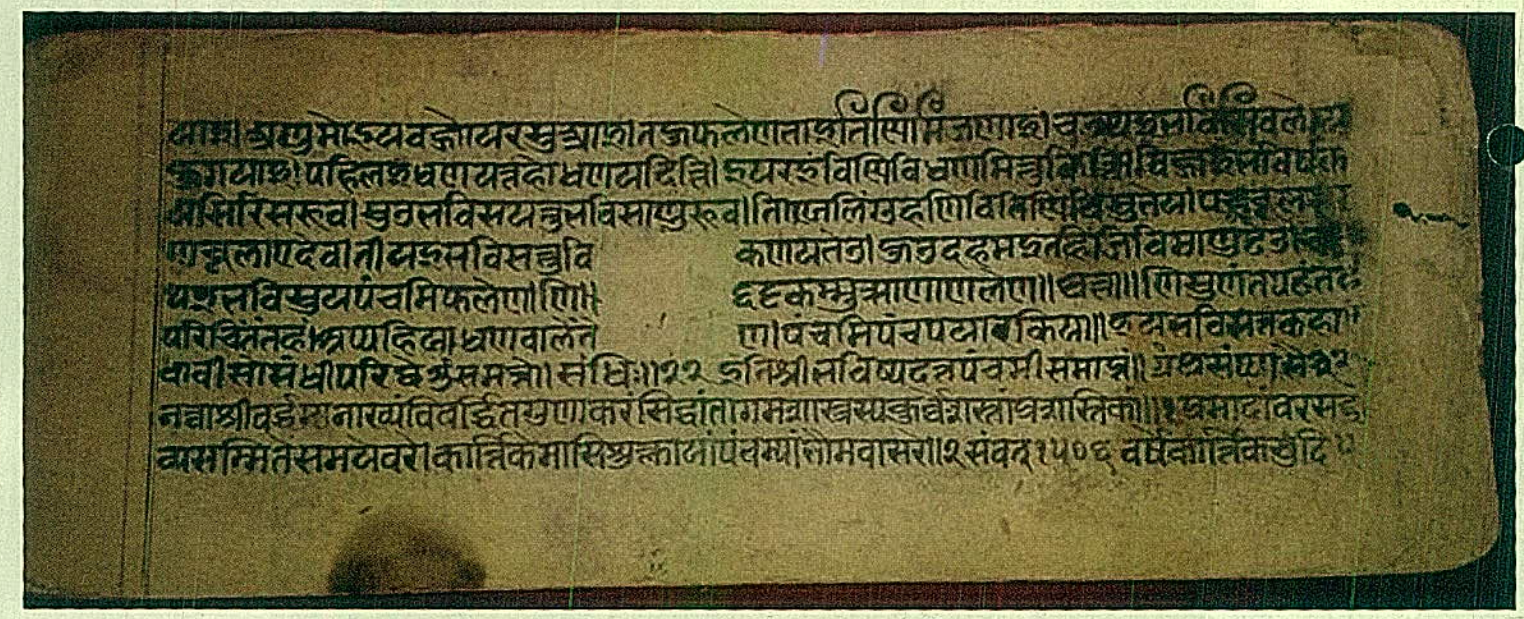

567 वर्ष प्राचीन भविष्यदत्त पंचमी (कथा) विक्रम सम्वत् 1506
कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ, इन्दौर में संरक्षित।

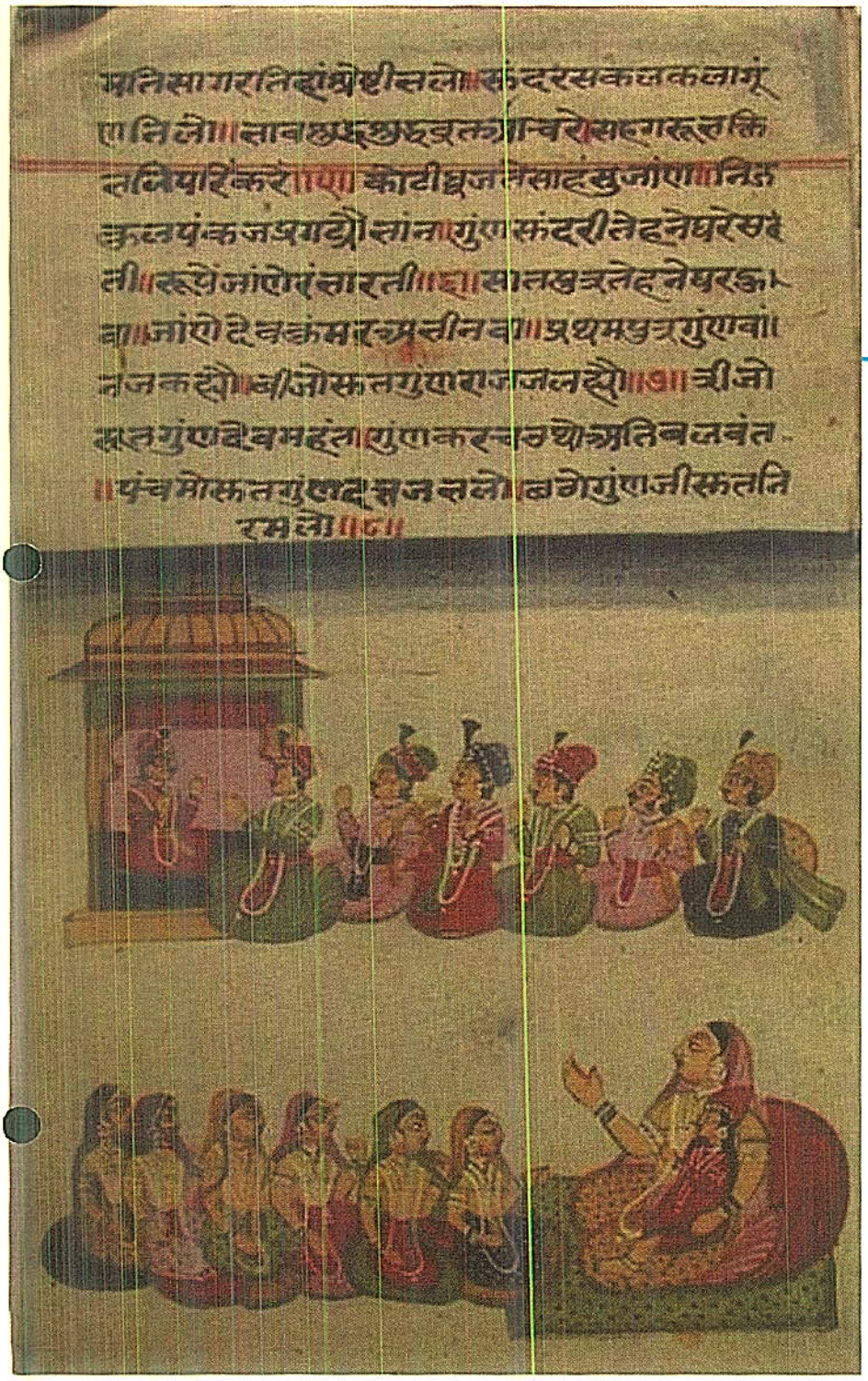

रविवार व्रतकथा द्वारा पं. गंगादास, विक्रम सम्वत ऐलक श्री पन्नालाल दि. जैन श्रुत भण्डार, झालरापाटन

कर्नाटक, महाराष्ट्र, राजस्थान, गुजरात, उ.प्र., बिहार आदि में समृद्ध शास्त्र भंडार है। जिनकी सूचना सबको है किन्तु आज भी अनेक विद्याप्रेमियों, श्रेष्ठियों, भक्तों के घरों में हजारों पांडुलिपिया सुरक्षित है। इनका सूचीकरण बहुत जरूरी है।

हमारी इच्छा है कि म.प्र. के समान ही अन्य प्रान्तों का भी विवरण सुव्यवस्थित रूप से तैयार किये जाये। तो अनेक नये ग्रंथ प्रकाश में आयेंगे।

जैन शास्त्र भंडार के व्यवस्थापकों से अनुरोध है कि वे निम्नांकित बिन्दुओं पर दृष्टिपात करे एवं उनका क्रियान्वित करे तो शास्त्रो की रक्षा में मदद मिलेगी

1. शास्त्र भंडार से पाण्डुलिपि/पाण्डुलिपियॉ किसी विद्वान को मूलतः न दी जाये। अध्ययन हेतु आवश्यकता होने पर उनकी छाया प्रति (फोटो स्टेट) कराके प्रबन्धकगण देवें। अत्यन्त प्राचीन, जीर्ण–शीर्ण पांडुलिपि की डिजिटल फोटोग्राफी कराकर देवें।
2. ग्रंथालय के पास खाने–पीने की वस्तुएं एवं धृत आदि न रखें अन्यथा इनकी गंध पाकर कीटाणुओं का आगमन होगा, चूहे आदि भी आ सकते हैं, जो पाण्डुलिपि को नष्ट कर सकते हैं।
3. पाण्डुलिपियों को लोहे की अलमारी में ही रखें। काष्ठ की अलमारी अथवा दीवाल से बनी अलमारी का उपयोग न करें क्योंकि काष्ठ की अलमारियों में दीमक प्रवेश कर सकती है एवं दीवाल की अलमारियों में सीलन प्रवेश कर जाती है।
4. वर्ष में एक बार ग्रंथालय की सफाई अवश्य करें तथा ग्रंथों को हवा लगाये किन्तु सीधे धूप में न रखें।

श्रीधराचार्य (750 ईसवी) कृत गणितसार (त्रिशतिका) जैन मठ, मूडबिद्री (कर्नाटक)

5. समय–समय पर भंडार में कीटनाशक दवाईयों का छिड़काव किया जाये तथा अलमारी में कीटनाशक गोलियां रखें।
6. शास्त्र भंडार में शास्त्रों के साथ सूचीकरण करने वालों के द्वारा लगाये गये कार्डों को सुरक्षित रखें एवं शास्त्रों को क्रमानुसार ही जमा कर रखें।
7. पांच–सात शास्त्रों को एक साथ पुरानी सीसम की लकड़ी के डिब्बे में रखने से उन पर बाह्य नमी और ऊष्मा का प्रभाव नहीं पड़ता।
8. शास्त्र को सीलन से बचाये तथा प्रत्येक शास्त्र को वेष्ठन में कसके बांधे जिससे कीट व शीत का प्रभाव शास्त्र पर न पड़े।
9. भीगे या सूखे हुए ग्रंथ सीधे धूप में नहीं सुखाना चाहिये अन्यथा वे टेढ़े हो जायेंगे या चटक जायेंगे।
10. भीगकर चिपके ग्रंथ के पन्नों को अलग करने के लिये उन्हें पुनः हल्का नम करना आवश्यक होता है। अन्यथा उन्हें अलग किया जायेगा तो वे फटेंगे या लिखे हुए पन्ने एक दूसरे पन्नों में चिपके रह जायेंगे। चिपके पन्नों को अलग करने के लिये बरसात के समय की आर्द्र वायु लगाकर या पानी का वाष्प देकर उन्हें नम किया जा सकता है। हल्का आर्द्र होने के बाद पन्ने चाकू से धीरे–धीरे अलग करें। पृष्ठों पर हल्का गुलाल छिड़कने से फिर पृष्ठ नहीं चिपकते।
11. दीमक ग्रसित हो गये ग्रंथों को सुरक्षित ग्रंथों के साथ न रखें अन्यथा सुरक्षित ग्रंथों में भी दीमक प्रवेश कर जायेगी।
12. दीमक ग्रसित ग्रंथों को साफ करके (दीमक हटा के) उन पर लौंग या अजवाइन का पावडर बुरककर रख देने से किंचित सुरक्षा हो जाती है।
13. नमी वाले स्थान पर ग्रंथालय नहीं होना चाहिये। पाण्डुलिपि कक्ष की दीवारों पर चूने की पुताई करानी चाहिये क्योंकि यह नमी को नियंत्रित करता है।
14. पाण्डुलिपि कक्ष की खिड़की–दरवाजों पर परदों को डालकर रखना चाहिये, जिससे प्रकाश या धूप सीधे ग्रंथों पर न पड़े।
15. परिवेश को धूल रहित करने के लिये भवन के चारों ओर घास तथा वृक्ष लगाये।
16. पाण्डुलिपि बस्तों को एक–दूसरे के ऊपर लाद कर नहीं रखना चाहिये।
17. महत्वपूर्ण पाण्डुलिपियों को आन्तरिक कक्षों में बक्सों में रखें जिन्हें आपातकालीन स्थिति उभरने पर पूर्व निश्चित सुरक्षित स्थान पर आसानी से ले जाया जा सकें।
18. जब नई पाण्डुलिपि प्राप्त हो तो उन्हें संग्रहीत पोथियों के साथ न रखें। पहले उनकी जाँच करें यदि कीटग्रस्त हो तो उपचार के एक महीने बाद पुनः जाँच करके ही संग्रह में रखें।
19. पाण्डुलिपियों को सुरक्षित रखने हेतु इन पंच तत्वों का उपयोग करें–

    1) कलौंजी (मंगरौल) – 100 ग्राम, 2) घुड़ बच्छ–100 ग्राम, 3) दाल चीनी–100 ग्राम, 4) लौंग–25 ग्राम, पीपर–25 ग्राम। इन पाँचों के मिश्रण में 5 ग्राम कपूर मिलाकर चूर्ण तैयार करें। इन्हें कपड़ों की छोटी–छोटी थैली बनाकर अलमारियों में रख दें। यह चूर्ण छः माह तक इस्तेमाल किया जा सकता है।
20. शास्त्र भंडार की व्यवस्था में किसी भी असुविधा की स्थिति में आप मार्गदर्शन हेतु लेखक से सम्पर्क करें। हमें आपकी समस्या का निदान कर प्रसन्नता होगी।
21. यदि आप इन शास्त्रों की सुरक्षा में कुछ असुविधा महसूस कर रहे हो एवं इन शास्त्रों को किसी सुरक्षित स्थान पर स्थानान्तरित करना चाहते हो तो हम कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ में उनको स्वीकार करने हेतु सहर्ष प्रस्तुत हैं। यहां पुस्तकालय में उन्हें सुरक्षित रखा जा सकेगा।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की अध्यक्षा श्रीमती सरिता एम.के.जैन ने मेरे साथ कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ के भंडार एवं वहाँ की कार्यशैली को सूक्ष्मता से समझा, सराहना की तथा सब प्रकार के सहयोग का आश्वासन भी दिया। जिनमंदिरों, तीर्थों की तरह जिनवाणी का संरक्षण भी जरुरी है।

पांडुलिपि सर्वेक्षण, सूचीकरण, संरक्षण, लिप्यांतरण, अनुवाद एवं समालोचनात्मक अध्ययन हेतु सक्षम एवं इच्छुक विद्वानों के प्रस्ताव आमंत्रित है।

सन्दर्भ स्थल

1. Project Document NMM, 2003, International Journal of Information Research, 1 (1), September, 2011. through Kishore John & Archana Verma, Digitisation of Manuscripts in India, A Case Study of Kundkunda, Jnanapitha, Indore.

2. Address by the Director-NMM, on 24.03.14, Kriti Rakshana, April-13 to March 14, P.1-3

3. कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ (MRC) के कार्यालयीन अभिलेखों से साभार। वहाँ प्रत्येक जिले के

भण्डारों का पूर्ण विवरण सुरक्षित है। वहाँ की पांडुलिपियों का विवरण एवं सम्पर्क सूत्र भी उपलब्ध है।

मानद सचिव–कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ
584, महात्मा गाँधी मार्ग, तुकोगंज,
इन्दौर–452009 (म.प्र.)

ईडर में भव्य प्रतिष्ठा महोत्सव

सान्निध्य धर्मालंकार आचार्य श्री रयणसागरजी महाराज एवं उपाध्याय अनुभवसागर जी महाराज ससंघ

दिनांक 28/29 जनवरी 2017 के दिन आचार्य भगवंतों के सान्निध्य में प्रतिष्ठाचार्य श्री सुधीरजी जैन, केसरिया वाले के द्वारा भूगर्भ से प्राप्त श्री आदिनाथ और श्री पार्श्वनाथ भगवान की 1200 वर्ष पुरानी खड़गासन मूर्तियां एवं चतुर्मुखी प्रतिमाओं का (इन्द्रकमलासन पर) एवं आचार्य श्री अभिनन्दनसागर जी महाराज के चरणों की प्रतिष्ठा की गई। दो दिन समाज के सभी श्रावकों ने श्रद्धा भक्तिपूर्वक यागमंडल विधान में भाग लिया।

घोषणा पत्र

प्रकाशन अवधि	: मासिक
प्रकाशक/मुद्रक/संपादक	: उमानाथ रामअजोर दुबे
राष्ट्रीयता	: भारतीय
मालिक	: भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई - 400 004

द्वारा त्रिमूर्ति प्रिंटर्स, 5 वी.पी.रोड, सी.पी.टैंक, मुंबई - 400 004 से मुद्रित कर भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई- 400 004 से प्रकाशित.

मैं एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार उपर्युक्त विवरण सत्य है.

- उमानाथ रामअजोर दुबे, संपादक

हरियाणा की शहरी स्थानीय निकाय मंत्री श्रीमती कविता जैन जिन्हें 22/1/17 को एम.आय.टी पुणे द्वारा आदर्श युवा विधायक पुरस्कार से सम्मानित किया गया है, उनके कर कमलों द्वारा वरिष्ठ पत्रकार श्री रमेश जैन एडवोकेट (नवभारत टाईम्स) नई दिल्ली द्वारा लिखित पुस्तक महापुरुषों 151 प्रेरक प्रसंग के नवीन संस्करण का लोकार्पण करते हुए श्रीमती कविता जैन।

श्री महावीर ग्रुप ऑफ इण्डस्ट्रीज

संस्थापक एवं निदेशक
स्व. दयाचन्द जैन (फ्रीडम फाईटर)
मो. 98141 75293

IN THE SERVICE OF NATION 1970 ESTD.

मैनेजिंग डायरेक्टर
राजेन्द्रकुमार जैन
मो. 98140 92613

जगराओ (पंजाब)	श्री गंगानगर (राजस्थान)	जम्मू (कश्मीर)	कोलकाता (बंगाल)
223191, 223103	2494412	2547876	98304 86979
222 093, 228962	2494413	2547239	99973 4272

ध्वजा: हमारी अस्मिता

सौ. विजया अविनाश संगई
अंजनगांव सुर्जी (अमरावती)

**हमारे समस्त तीर्थों पर बने जिनमदिरों पर ध्वजा का आरोहण किया जाता है।
ध्वजाओं के सम्बन्ध में महत्व पूर्ण तथ्यों की जानकारी देने वाला यह आलेख तीर्थ प्रबन्धकों हेतु उपयोगी है।**

सम्पादक

**दृष्टं जिनेंद्र भवनं भवतापहारी भव्यात्मनां विभवसंभव भूरिहेतु!
दुगाब्धिफेन, धवलोज्ज्वल कूटकोटी, नद्धध्वजप्रकरराजि विराजमानम्।।**

आचार्य सकलचंद्र मुनि को दूर से ही मंगलमय मंदिर दृष्टिपथ में आता है और उसके दर्शनमात्र से ही वह भाव विभोर होकर अपनी भावना दृष्टाष्टक (स्तोत्र) में व्यक्त करते हैं, मैनें आज, मेरा भव रोग नष्ट करने वाले जिनेन्द्र प्रभु के मंदिर के दर्शन किये। केवल मंदिर के दर्शन मात्र से ही असीम वैभव की प्राप्ति होती है, यह मंदिर, दुग्ध फेसयुक्त, समुद्र सम धवल और उत्तुंग कोटि शिखरों से युक्त मंडित है और इस पर ध्वजा की पक्तिं शोभायमान हो रही हैं।

राष्ट्रध्वज की तरह प्रत्येक धर्म का भी अपना एक ध्वज होता है, वह ध्वज उस धर्म के विशेष गुणों को परिलक्षित करता है।

ध्वज! भारतीय संस्कृति का मानदंड शिखरों पर सर्वोच्च रुढ़, पवन संग लहराने वाली यह वैजयंती के दिखते ही मन मयूर पुलकित होता है।

जैन शासन में ध्वज की प्रथा अत्यंत प्राचीन काल से है। श्रमण-साध्वी-श्रावक श्राविका यह चतुर्विध संघ जैन धर्म ध्वज में स्थित है।

ध्वज श्रेष्ठ घर-घर लगे केशरी ये

इस पद के अनुसार केशरिया ध्वज ये जैन मंदिर, जैन धर्म और जैनियों की पहचान है, ध्वज की उत्तुंग फहरानेवाली शिखा देखकर जैन धर्म के अस्तित्व और अस्मिता का एहसास होता है ऐसा प्रतीत होता है की मानो ये ध्वज जैन धर्म की निरंतर प्रभावना होती रहे ऐसा संदेश देती है। जैन धर्म ये शाश्वत धर्म है इस जगत के सभी प्राणियों का कल्याण और मन के विकारों को नष्ट करने वाला है। जीओ और जीने दो ये हमारी जनसंस्कृति और मंगल भावना की अभिव्यक्ति इस ध्वज से होता ह अहिंसा के साथ, निर्भयता और अभयता का प्रतिपादन करने वाली ये ध्वजा! जैसे उंचे पद पर आसीन है उसी प्रकार हर एक मानव को अपना जीवन सर्वोच्च पद की ओर ले जाने का प्रयत्न करना चाहिये।

ध्वज जैन संस्कृति का मूक प्रकाशमय दीपस्तंभ है जिसे मंदिर में विराजमान करना अत्यंत मंगल कार्य है, अष्ट मंगल द्रव्य में ध्वज यह एक मंगलद्रव्य है। भगवान के समवशरण, विहार प्रसंग में जिस प्रकार धर्मचक्र रहता है। उसी प्रकार केशरिया ध्वज भी रहता है।

ध्वज के संबंध में 3 बाते अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

1) ध्वजा 2) ध्वजदंड 3) ध्वजाधार

1) ध्वजा: ये केसरी वर्ण की वस्त्रनिर्मित होनी चाहिये। मध्यंतर में तांबेकी या चांदी के पत्रों से निर्मित ध्वज की प्रथा रुढ़ हो गयी थी लेकिन प्राचीन ग्रंथों में वस्त्र निर्मित ध्वजा का उल्लेख है।

2) ध्वजदंड: ध्वजदंड ये (काष्ठ) का और सीधा होना चाहिये ये काष्ठा बांस, अंजन, मुहआ, शोशम या खैर वृक्षों के होने चाहिये।

3) ध्वजस्थान या ध्वजाधार: ध्वजाधार यानी ध्वज अटकने की जगह, मंदिर के शिखर पर ध्वजदंड लगाकर उस पर ध्वज लगानी चाहिये। जिसप्रकार कलशविहीन शिखर शोभा नहीं देता उसी प्रकार ध्वजविहीन देवालय भी शोभायमान नहीं होता। वास्तुशास्त्र के अनुसार ध्वज हमेशा ईशान दिशा में होनी चाहिये।

ध्वज का आकार और माप: ध्वज ये 12X8 इस प्रमाण में होनी चाहिये अर्थात 12 अंगुल लंबाई और 8 अंगुल चौडाई होना ऐसा उल्लेख है इस ध्वज पर तारा (सूर्य), चंद्र व माला होनी चाहिये- यावतृचंद्र दिवाकरों- सूर्य और चंद्र के समान रात्रि दिन धर्म ध्वजा प्रकाशित रहे इसका अंकन मानो चंद्र सूर्य के रूप में किया गया है, इसके अलावा ध्वजा में छोटी-छोटी घंटिया

भी रहनी चाहिये। इस घंटियों के निनाद से वातावरण और अधिक मंगलदायी होगा। आज की भाषा में घंटियों को मधुर आवाज एक प्रकार की म्यूजिक थेरेपी है जिसके ध्वनि कंपनों में अनेक रोगों को नष्ट करने की शक्ति है।

ध्वज की उँचाई:- मंदिर के शिखर पर विराजमान कलश से एक साथ उँची ध्वजा आरोग्यता प्रदान करती है, दो हाथ उँची ध्वजा सुपुत्रादि और संपत्ति प्रदान करने वाली है, तीन हाथ ऊँची धान्य संपत्ती और चार हाथ ऊँची ध्वजा राजा और प्रजा की वृद्धि करने वाली है और पांच हाथ ऊँची ध्वजा सर्वत्र सुभिक्षता दर्शाती है चारों ही बाजू से योग्य तरह से फड़कने वाली वस्त्रनिर्मित ध्वजा लक्ष्मीपद कीर्ति व प्रताप की वृद्धि करने वाली है ऐसी ये ध्वजा सभी प्राणीमात्र को विजयप्रदायिनी, सुखदायिनी और ऐश्वर्यदायनी है इसलिये ध्वजा, मंदिर की गरिमा है।

ध्वजारोहण करने का मंत्र-

ऊँ णमो अरहताणं स्वास्तिभद्रं भवतु सर्वलोकाय शांन्तिर्भवतु स्वाहा।।

ध्वजारोहण करनेवाली व्यक्ति की भावना

श्रीमज्जिनस्य जगदिश्वर ता ध्वजस्य
मीनध्वजादि रिपुजाल जयध्वजस्य
तन्न्यास-दर्शन जना गमन ध्वजस्य
चारोपणं विधवद विदधे ध्वजस्य

यह ध्वजा 24 तीर्थंकर (वृषभदेव से महावीर) व जैन शासन की जगदीश्वरता दर्शाती है। ये षडरिपु, कषाय आदि शत्रुसमूह पर विजय की प्रतीक है। जिनबिंब दर्शनार्थी के लिये जो सुखप्रद है ऐसी ध्वजा का मैं विधिवत आरोहण करता हूँ।

दुंदुभि, ताल मृदंग, झांझ, घंटा आदि मंगल वाद्य के घोष व तालियों की गड़गड़ाहट से जो भव्य पुरुष भक्ति व श्रद्धापूर्वक ध्वजारोहण करता है वो अवश्य ही मुक्ति भाजन बनता है।

ध्वजारोहण का मुहूर्त: शुभ तिथि, शुभ नक्षत्र पर ध्वजा आरोहित की जानी चाहिये कई जगहों पर अलग-अलग दिनों का महत्व है कहीं ये ध्वजा दशहरे के दिन, तो कहीं पर ये ध्वजा दीपावली के पाड़वे के दिन आरोहित की जाती है। शायद साढ़ेतीन मुहुर्त में से मुहूर्त भी इसके लिये निश्चिय किया जा सकता है। यदि मंदिर की ध्वजा फट गई या रंगहीन हो गई हो तो मात्र उसे शुभ दिन देखकर तुरंत बदल कर नई ध्वजा चढ़ानी चाहिये। ध्वजा चढ़ाना ये अत्यंत पुण्यप्रद क्रिया है।

भगवान के समवशरण में भी 5 वीं भूमि ये ध्वज भूमि कहलाती है मुख्य ध्वजा ऊँची व छोटी ध्वजा की संख्या 108 ध्वजा इस प्रकार ये भूमि शोभायमान रहती है।

ध्वज पर मंगलमय स्वस्तिक रहता है- स्वस्तिक ये एक रहस्यमय प्रतीक है। सु = सुंदर मंगल, आंरित = उपस्थिती अस्तित्व। तीनों लोकों में

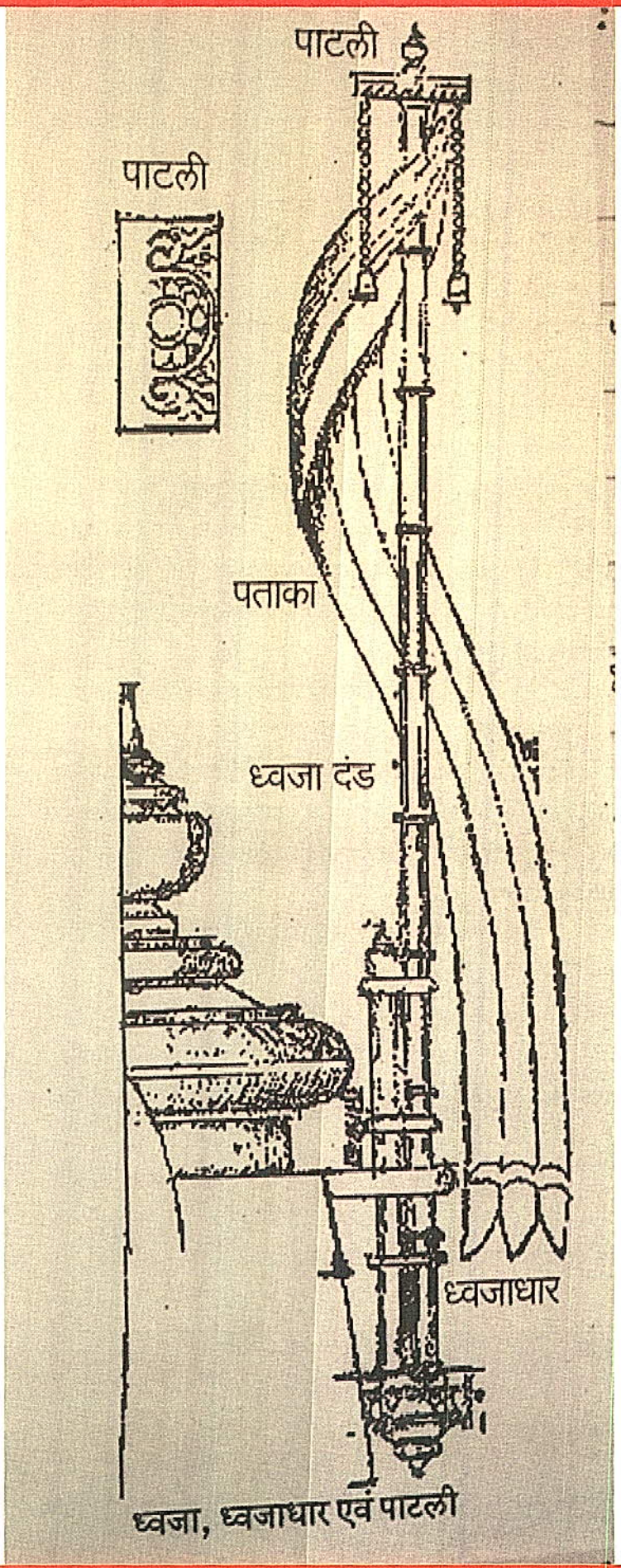

ध्वजा, ध्वजाधार एवं पाटली

त्रिकाल प्रत्येक वस्तु अपने सहज स्वभाव में विद्यमान है वही सत्य है वही सुंदर है शिवस्वरुप है वही स्वस्तिक है अर्थात सुंदर उपस्थिति स्वरूप है।

जैन धर्म, जैन ध्वज व शासन स्वस्तिरुप अर्थात कल्याणरूप है स्वस्ति करोति इति स्वस्तिक स्वस्ति ये आदि चिन्ह हैं व शुभकायों का प्रतीक हैं, स्वस्तिक की चार रेखाऐं चार गतियों के प्रतीक हैं। तीन बिंदु रत्नत्रय के प्रतीक हैं। रत्नत्रय से चतुर्गति रूप भवसागर से पार निकलना है बिंदुओ के ऊपर अर्धचंद्र सिद्धशिला का प्रतीक है जहाँ हमें विराजमान होना है। स्वस्तिक संसारी जीवों को विलक्षण मोक्ष मार्ग का पाठ सिखाता है। रत्नत्रय की आराधना से जीव मोक्ष की प्राप्ति कर सकता है। अर्धचंद्र के ऊपर जो बिंदु है वह उत्तम सुख का प्रतीक है।

वर्तमान में जैन शासन का पंचरंगी ध्वज

भगवान महावीर के 2500 वें निर्वाणोत्सव के उपलक्ष में परम पूज्य आचार्य श्री विद्यानन्दजी मुनिराज ने भगवान महावीर को मानने वाले समस्त जैन साधु संत श्रेष्ठियों से विचार विमर्श कर पूर्वाचार्यों द्वारा रचित आगम के मार्गदर्शनानुसार जैन शासन का पंचरंगी ध्वज कैसा हो? यह निर्णय लिया जिसे सभी ने मान्य किया।

इस ध्वज में क्रम से अरुणाभ (लाल) पीताभ (पीला) श्वेताभ (सफेद) हरिताभ (हरा) नीलाभ (नीला) ये 5 रंग अपनाये गये हैं। यह ध्वज आकार में आयताकार है तथा इसकी लंबाई व चौड़ाई का अनुपात 3.2 है। लाल पीली हरी और नीले रंग की पट्टियां चौड़ाई में समान तथा सफेद रंग की पट्टी अन्य रंगों की पट्टी की अपेक्षा चौड़ाई में दुगुनी होनी आवश्यक है।

ध्वज के मध्य में स्थित स्वस्तिक का रंग केशरिया है। इस सर्वमान्य ध्वज में 5 रंग, पंच परमेष्ठी के प्रतीक है। पंचअणुव्रत एवं महाव्रतों के प्रतीक हैं।

श्वेत रंग: शांति एवं अहिंसा का प्रतीक, अरिहंत परमेष्ठी व भगवान चंद्रप्रभु व पुष्पदंत तीर्थंकर का द्योतक है अहिंसा इस व्रत का द्योतक है।

लाल रंग: कल्याण का कारक है, सिद्धपरमेष्ठी, अघातिया कर्म के निर्जरा का प्रतीक, पद्मप्रभु व वासुपूज्य ये दो तीर्थकरों के शरीर का रंग लाल था, व्रतों में सत्याव्रत उजागर करता है।

पीत वर्ण: धनादि के लाभ का दर्शक है आचार्य परमेष्ठी (शिष्यों के प्रति वात्सल्य) का प्रतीक है। छह तीर्थकरों के शरीर का रंग सुवर्ण के समान पीला था, यह वर्ण अचौर्य गुणों का प्रतिपादन करता है।

हरित वर्ण: अभय को दर्शाता है, उपाध्याय परमेष्ठी का हरा रंग प्रेम विश्वास- आप्तता का प्रतीक है। सुपार्श्वनाथ व पार्श्वनाथ ये दो तीर्थंकर हरित वर्ण धारी थे। इस रंग ने ब्रम्हचर्य व्रत की धुरा संभाली है।

नीलवर्ण : विजय का सूचक है साधु परमेष्ठी का नीला रंग साधना में लीन होने का और मुक्ति की ओर कदम बढाने का संकेत देता है मुनिसुव्रत व नेमिनाथ तीर्थकर ये श्यामवर्णी थे, नीलारंग अपरिग्रह का प्रतिपादन करता है।

स्वस्तिकके ऊपर तीन बिंदु सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान व सम्यक् चारित्र को दर्शाते हैं और अर्धचंद्र के ऊपर जो बिंदु है वह उत्तम सुख का प्रतीक है।

स्फटिक के समान श्वेत, लाल, पीत, श्याम (हरा) और नील (काला)- ये पाँच वर्ण क्रमश: पंचपरमेष्ठी के सूचक हैं।

पंचवर्ण का फल

शान्ती श्वेतं जये शामं, भद्रे रक्तमभये हरित।
पीतं धनादिसंलाभे, पंचवर्ण तु सिद्धये।।

उमास्वामी- श्रावकाचार, 138, पुष्ठ

1. श्वेतवर्ण शांति का प्रतीक है।
2. श्याम वर्ण विजय का कारक है।
3. रक्तवर्ण कल्याण का कारक है।
4. हरितवर्ण अभय को दर्शाता है।
5. पीतवर्ण धनादि के लाभ का दर्शक है।

इस प्रकार पॉचों वर्ण सिद्धि के कारण है।

पंचवर्णी ध्वजा को विजय का प्रतीक माना है।

ध्वज के प्रति सावधानता:

1) ध्वज ये उँचे स्थान पर व स्पष्ट नजर आये ऐसे स्थान पर लगाना चाहिये।

2) किसी भी परिस्थिति में धर्मध्वज का अपमान न होवे ऐसी सावधानी हमें रखनी चाहिये, धर्म जितना धर्मध्वजा भी महत्वपूर्ण है।

3) फटा हुआ, सल पडे हुऐ ध्वज, प्रयोग में नहीं लाना चाहिये।

4) दिखावे के लिये ध्वज का उपयोग करे।

5) ध्वज का स्पर्श भूमि को न होने देवे।

6) ध्वज का आच्छादन रूप में प्रयोग न करे।

7) फटा हुआ ध्वज कहीं भी, कैसे भी न फेंके।

और अंत में ये प्रतिज्ञा लेनी चाहिये

मै जैन ध्वज, जैन शासन, सार्वभौम महामंत्र णमोकार, अहिंसा, अनेकांतवाद, देवशास्त्र गुरु इन सभी के प्रति मन वचन काय से निष्ठावान रहूंगा ऐसी प्रतिज्ञा करता /करती हूँ।

हम सभी को हमारा धर्म, ध्वज एवं अस्मिता की प्राणों से भी बढ़कर रक्षा करना है।

जैन जयतु शासनम्।

EXISTENCE OF JAINISM IN SHRI LANKA

Prof. Bhagchandra Jain "Bhaskar", Nagpur

Jainism crossed India from south in about the eight century B.C., if not earlier, and became one of the important religions of Ceylon, which was known in those days by the name of Laṇkā, Ratnadvipa or Sinhala. The people of India used to cross and reached Sri Lanka from various parts like Bengal, Gujarat and South India. Particularly the Southern part was the main centre where Bhadrabāhu and Visākhācārya with their hundreds of disciples migrated to the South and propagated Jainism of Tirthankara Rshabhadeva, Parshvanatha and Mahavira tradition a lot. Āndhra Sātavāhanas, Pallavas Pāṇḍyas, colas, Cālukyas, Raṣṭrakūṭas, etc. were main dynasties which rendered sufficient royal patronage and benefits to Jainism and its followers through the spirit of religious toleration existed in this region. The Jainas were given magnificent grants for their spiritual purposes. Numerous Jaina temples and sculptures were eracted by kings and many facilities were provided for literary services through out India. As a result the Jaina Ācāryas wrote their ample works in South Indian Languages like Sanskrit, Prākrit, Tamil, and Kannada.

The aim and object of the present paper is to bring into light the evidence of existence of Jainism in Sri Lanka prior to advent of Buddhism there in the Island. The Jain traditional record is already there in this respect which is now supported by Sri Lankan literature and archaeological findings.

The literary evidence

The Mahāvāmsa, the best-known and most authoritative Ceylonese Chronicle in Pāli verse of about fifth century A.D., refers to the existence of Jainism in Ceylon even before the arrival of Buddhism. In the first chapter of the Mahavamsa, it is said that the Buddha reached in Sri Lanka in the ninth month after the attainment the Sambodhi with the sole object to spread his religion in the Island which is only possible if the Yakkhas and Yakkhinis from Lanka could be exiled.

Sasanujjotanam thanam lanka nata jinena hi.
Yakkhapunnaya lankaya, yakkha nibbasi yati ca.ibid. 1.20

Those days the island was fully inhabited by Yakkhas and Yakkhinis. The Mahavamsa refers to the number of Yakkhas and Yakkhinis of Naga clan was eighty Karoda who were initiated in Buddhism (1.61-62). Their congregation was arranged around the Mahiyangana Stupa situated at the bank of the river Mahavali Ganga with the sole aim and object to exile them from the Island (1.18-24):

Bodhito navame mase Phussapunnamiyam jino.
Lanladipam visodhetum, lankadipamupagami.
Sasanujjotanam thanam, lanka nata jinena hi.
Yakkhapunnaya lankaya, yakkha nibba siyati ca.
Natova lankamajjhamhi gangabhire manorame.
Tiyojanaya te ramme , ekayojanavitthite.
Mhanagavanuyyane , yakkhasangamabhumiya.
Lankadipatthayakkhanam, mahayakkhasamagamo.
Mahiyanganathupassa, thane vehayasam jino.
Vutthivandhakaresi, tesam samvejanam aka.

Mahavamsa, 1.18-24

It clearly indicates that the Island was originally predominated by Yaksha culture which was more popularized at the area of Anuradhapur, Polannarua ,Ratanpur, Sumanakuta (Shripada Adamapeetha) (1.33) etc. Further it is said that the Buddha went to Nagadvipa (Jaffna Peninsula) whose ruler was called Dviparaja, the king of Anuradhapur. There was one Vardhamanagiri (Vaddhamanamhipavvate) (1.47-48) which was ruled over by a Naga king. The third time the Buddha reached to Sumanakuta where he rested his foot-steps (Caranacinha).

Here the Mahavamsa refers to Yakkha, Yakkhini, Naga, Mahiyangana-thupa and Vaddhamana-Pavvata. All these words are related to Jain culture. There are some more references in Pali literature which are in favour to prove the existence of Parshvanatha tradition in Sri Lanka. Let us try to understand first the origin of human community in the reign.

If we combine our anthropological, archaeological , and traditional studies, we may come to the conclusion that at the earliest stage, the human race resided in different provinces was mainly divided into three communities which were quite different from each other:

One resided in between the land situated between two rivers the Ganga and Yamuna and spread up to Anga-Magadha in North India. This race was very much worshiper of non-violence, follower of the religious and spiritual concepts, viz. the existence of self and Karma, Purusharthavada, Vagetarianism , Anishvaravada, Murti-worshiping, Nivrattivada and Mokshavada

One which used to reside generally in Southern provinces and well-versed in scientific aptitude. They were called Vidyadharas consisting of Naga, Yaksha, Vanara and other wandering races. In later period they were named as Dravid.

One which resided in North-western mountainous provinces and spread over entire middle Asian countries. In later period, they were called Indo-Aryan or Aryan.

The first race was the follower of Tirthankara Rshabhadeva and his traditional followers like, Neminatha, Parshvanatha and Vardhamana Mahavira. In later period they were known by the name of Jain community, the follower of Shramana culture. The Gautama the Buddha was also counted as its follower. The naked Torsho found at Mohenjodaro and Hadappa in the Kayotsargic posture during excavation must be related to Tirthankara Rshabhadeva who is remembered several times in the Vedas, and

other Vedic and Buddhist literature. Hundreds of references can be submitted from the Vedic literature regarding the Shramana culture adopted by Rshabhadeva and his followers.

The role of Yakkhas, Yakkhinis and Nagas

It is said there in the Mahavamsa that Vijaya (483-445 B.C.) and his followers had to face the opposition of Yakkhas and Yakkhiṇīs in their attempt to establish their kingdom in Lankā. After the passing away of Vijaya, Paṇḍuvāsudeva (444-414 B.C.), and Abhaya Paṇḍukābhaya (414-394 B.C.) captured the whole Island with the help of a Yakkhaṇi named Cetiya who lived in the Dhumarakha mountain near Tumbaramyana. Pāṇḍukābhaya then settled his helpers, Yakkhas and Yakhiṇis in various sides of the city of Anurādhāpura, a capital of Laṇkā. He is also said to have handed over some cities to his relatives. He then made the appointments of hunderds of Caṇḍālas to work in the city and erected a cemetery for them. Estward of that cemetery Paṇḍukābhaya built a house for the Nigaṇṭha Jotiya. In the same reign there dwelt another Nigaṇṭha named Giri and many other ascetics of various heretical sects. At the same place there was also built a chapel for the Nigaṇṭha Kumbhaṇḍaka towards the west from thence and eastward of the street of the huntsmen there lived about five hundred families of hertical beliefs (nānaapāsaṇḍikā):

The five hundred families of heretical beliefs and the construction of Vihāras to the Nigaṇṭhas on behalf of the king of Lankā, Paṇḍukābhaya, indicate clearly that Jainism was a living religion in Ceylon during his reign. The Anuradhapur, Pulanarua and Ratnadvipa were the main centres of Jainism which was very much popular among the Naga clan in Lanka. According to the Mahavamsa, the city Anuradhapur was full of Cetiyas, like Mahastupa (Ruvanveli cetiya, Thuparama cetiya, Shila cetiya (1.77-82). These Nagas were called Samanas, may be the Jain Samanas.

Paṇḍukābhaya's period, deduced on the basis of the date of Buddha's death as 544 B.C., is supposed to be 438-368 B.C. Jainism had apparently been introduced to Ceylon before Paṇḍukābhaya. It could have been even before the arrival of Vijaya. One may wonder whether a name like Ariṭṭha (i.e. that of Devānampiya Tissa's minister) had any connection with the Jaina Tirthaṇkara of that name. The congregation of Yakshas of Naga clan held at Mahiyangana (Vintena stupa) in the ancient city Anuradhapur backs our remembrance the congregation of Jain Munis held at Mahimanagari in Andhra in India about first century B.C. The first chapter Mahiyangamanagamana, Nagadipagamana and Kalyanagamana is very much important with the history of Jainism in Sri Lanka.

The Buddha and his disciples had to make their main centre Anuradhapaur with the view to controlling the Naga clan, the follower of Parshvanatha Jain tradition.

Jainism continued to exist even after the establishment of Buddhism in the Island. Its existence during the first century B.C. is recorded in the Mahāvamsa. It is said that after a battle with the Tamils, king Vaṭṭhagāmini Abhaya in the first century who was defeated fled out of the city. A Nigaṇṭha named Giri saw him and cried out loudly "The great black Sinhal is runninga away" (palāyati mahākāla Sihalo ti bhusam ravi, ibid. 33.43). When the great king heard this, he thought "If my wish be fulfilled I will build a Vihāra here" (siddhe mama manorathe vihāram kāressam). Hence, after a few years when he drove away the Damila Daṭhika from Anurādhāpura and regained his throne, he destroyed the Jaina monstery (Nigfantharama) and built Abhayagiri Vihāra in that place. It is named the Abhayagiri because the king Abhaya constructed it on the Giri Nigantha Vihara (33.78-83).

Accroding to the Mahāvamsa Ṭikā, this monastery was the scene of a tragedy in the time of Khallāṭanāga, predecessor of Vaṭṭagāmini. This king, when he discovered a plot against his life by his nephew, went to Giri's monastery and ended his life by burning himself. At the spot, where this event occurred, Khallātanāga's kinsman built a Cetiya called the Kurundavāsoka Vihāra.

SRI LANKA IN JAIN TRADITION

Jaina tradition takes the history of Jainism in Sri Lanka to an era anterior to that reflected by the Ceylon Chronicles. According to Jain records, the Yakṣas and Rākṣasas who inhabited Sri Lanka prior to its Aryanization by Vijaya were not only human beings with a well-developed civilization but also Jainaṣ by faith. The Vividhatirthakalpa mentions that at Trikuṭagiri in Kiṣkindhā of Laṇkā, there was a magnificent Jain temple which was dedicated by Rāvaṇa, for the attainment of supernatural powers (Kiṣkindhāyaṃ Laṇkāyāḥ pāṭalaṇkāyam Trikūṭagirau Śrisantināthah). To fulfill a desire of Mandodari, the principal queen, Rāvaṇa is said to have erected a Jain statue out of jewels and this, it is said, was thrown into the sea when he was defeated by Rāmachandra. Śaṇkara, a king of Kalyaṇanagara of Kannaḍa, came to know about this statue and he recovered it from the bottom of sea with the help of Padmāvatīdevī, a prominent Goddess of Jainas.

It is said that the statue of Pārsvanātha which is worshipped even now at Śrīipura Antarikṣa (India) was brought by Māli [illegible] Sumāli Vidyādhara from Laṇkā. Another statue of Pārsvanā[illegible] found in the caves of Tejapura ia also said to be from Laṇkā. The Karakaṇducariu describes how Amitavega, a Jain king of Malaya, used to visit Laṇkādvipa as an intimate friend of Rāvaṇa who built a Jain temple in Malaya. This Malaya can be identified with Malaya, the name of the central hill country of Ceylon. Likewise, a number of Jain stories are related to Sri Lanka where the Jain business men used to take a voyage.

The Kathasaritsagara refers to a story of Candraswamin who went to Narikeladvipa, Katahadwipa, Karpuradvipa, Swarnadvipa and Simhaladvipa in search of Kanakavarman. In the Pancama Bhava of the Samaraiccakaha, Samnatkumar, and VasubhutiSarthavahas went to Sri Lanka where his ship was sunk on the wy just after thirteen days after his departure.

Simhala was originally named as Tamrparni where prince Vijayassingh from Lat or Gujarat got down. His father's name was Simhabahu. Simhal may be named afte his name. Then it was called Sri Lanka. As we have already mentioned, the Mahavamsa refers to

an existence of Jainism before Samrat Ashok sent Mahendra and Sanghamitra to Sri Lanka for propagation of Buddhism. They had to face the clasheswith the Vidyadharasor Yakshas. Pandukabhaya succeeded in obtaining their cooperation and constructed Viharas for Jotiya and other Niganthas nearbyAnuradhapur. The tradition also supports that the Vidyadhara cult was there in Sri Lanka and there was a Jain temple at Trikutagiri near Kishkandha Nagari (Harivamsapuana. The Karakandacariu also mentiones there was a Jain temple on Malayagiri (p. 44-69).

The Satkhandagama is of the view that the language of Sri Lanka was not sweet and described it as Kubhasha. Sri Lanka was also named as Ratnadvipa. It was famous for pearls. The Kuvalayamala refers to a conference of the merchants relating to the conditions of their trade. In this connection, one merchant said that he went lto Ratnadwipa with leaves of the Nimba ree and brought gems from there (P. 65).

These references seem to point out that Jainism existed in Sri Lanka even before the birth of the Niganṭha Nātaputta. Vibhīṣaṇa, the younger brother of Rāvaṇa, who was a follower of Jainism according to Jain tradition and literature, is referred to as the tutelary Yakṣa of Sri Lanka (Vibhiṣaṇastaamraparanniiyaru) in the Mahāmāyūri, a magical text of Northern Buddhists, which was translated into Chinese in the fourth century A.D. Vibhīṣaṇa is still worshipped at Kelaniya and is supposed to be one of the four guardian deities of the Island.

Although the supremacy which Buddhism achieved in Sri Lanka could have led to the suppreassion of Jainism and incidents similar to the destruction of Giri's monastry by Vaṭṭa-Gāmiṇī Abhāya could have occurred at different times and different places, Jainism did not disappear from Sri Lanka till at least the eighth century A.D.).Professor Mahadevan discovered a Tamil Brahmi inscriptions at Muttupatti (Madurai) (No.244- 245) on the rock-cut bed in a cavern on the hill locally called Ummanamalai belonging to 1st-2nd centuries A.D. The term "Caiyalam" occurring in this epigraph is taken to mean a person from Sri Lanka of Vintaiur. T.V. Mahalingam , on the other hand, considers it a proper name as is denoted by masculione suffex "an".This inscription indicates clearly that Jain laymen used to live in Sri Lanka in the 1st-2nd C. A.D. About the tenth century A.D. Muni Yasaḥkīrti was requested by the then king of Sri Lanka to improve the state of Jainism in the Island. This shows that Jainism not only was in existence at that time in Sri Lanka, but it also enjoyed the patronage of Sinhala kings.

The Archaeological findings

As regards the Jaina monuments in Sri Lanka , up to the time of about 1950, there were no archaeological findings in Sri Lanka which could support the literary evidence regarding the existence of Jainism in Sri Lanka prior to arrival of Buddhism. The view of S. Parnavitana, an authoritative scholar on Sri Lankan Archaeology, is relevant :

"No remains of any Jaina monuments have ever been found in Ceylon. The earliest Stūpas and Vihāras of Jainism did not differ from those of Buddhism so much so, that without the evidence of inscriptions or of iconography it would be extremely difficult to differentiate between the two. Jainiconography had not yet developed in the times that we are dealing with. In the period during which this religion was prevalent in Ceylon, there were no monuments built of durable materials. Moreover, when Jainism disappeared, their places of worship must have been appropriated by the Buddhists as it happened with regard to the monastery of Giri, and any traces of the earlier faith would certainly have bēn obliterated in this way. Some of the earliest unidentified stūpas of small dimensions may, however, be Jaina in origination."

I have gone through the "Ancient Ceylon", the journal of the Department of Archaeology of Sri Lanka and found the article there entitled " Sri Lanka sparks revolution in South Asian history and Achaeology" written by Namal Kodithuwakku (No. 24, July 2015, pp. 251-254). According to the author, the inscription found at Anuradhapur is inscribed in old Brahmi script of about 6th 5th century B.C., if not earlier. These findings have since been corroborated by discoveries of Brahmi in South India dating from the same period. The archaeological research excavations were conducted in the ancient administrative cebtre, the "Citadel", of Anuradhapurby Dr. Siran lDeraniyagala of the Archaeological Department in 1988. The probed the origins of the settlements at Anuradhapur, at depths of nearly 30 feet below present ground level.Contrary to hitherto held belief, these beginnings were scientifically (radiocarbon) dated to around 900 B.C. with a settlement area of as much as 35-65 acres , representing a large village. It is also reported that the bricks found here in the excavations were used in the Caityas of Niganthas situated at Anuradhapur. As the first and other chapters of the Mahavamsa refers to the Chaityas of Niganthas of prior to the arrival of Buddhasm were also dated about ninth tenth c. B.C. and the bricks are named "Jain Bricks" as reported by the Departmen of Archaeology, Sri Lanka. If it is accepted, the existence of Jainism in Sri Lanka is proved in the tenth c. B.C. As we are aware of the fact that the Caturyamasamvara tradition of Tirthankara Parshvanatha is mentioned in the Dighanikaya and Majjhimanikaya very clearly. It appears that this tradition was very much popular in Sri Lanka during those days.

These meagre bits of evidence prove that Jainism existed in Sri Lanka during at least tenth century B.C. If any credit is given to the legends of Rāvaṇa, the upper limit may be extended by a few more centuries. If the historicity of these legends is established it would be interesting to find that early Jainism which preceded Pārsvanātha had also founded a foothold in Sri Lanka.

Professor Emeitus Bhagchandra Jain Bhasika
Tukaramchal, Sadar. Nagpur-440001,India
Phone: o9421363926, 0712-2541726; Email:
drbcjain@hotmai.com

श्री शांतिगिरि अतिशय क्षेत्र आमीगाँव

शिवपुरी रोड बरई पनिहार, ग्वालियर (म.प्र.)

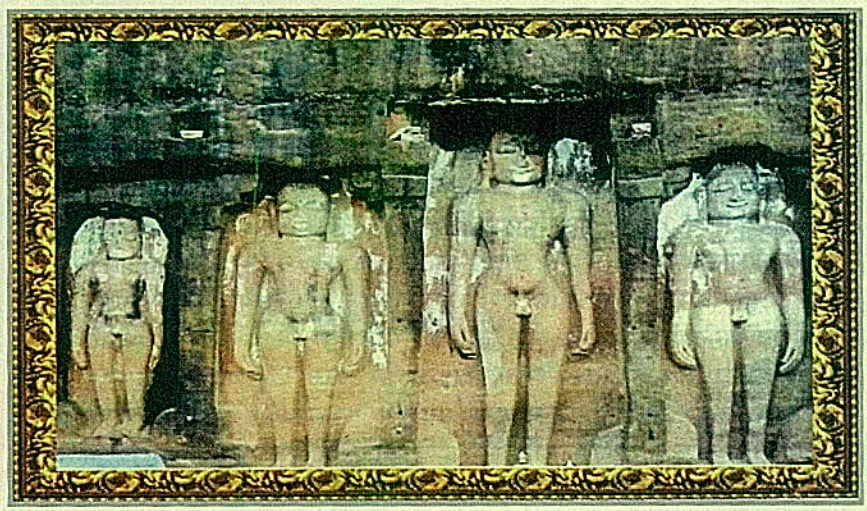

श्री सुप्रतिष्ठित केवली निर्माण स्थल गोपागिरि विश्व विख्यात है। ग्वालियर किले के चारों और हजारों जैन प्रतिमाएं गोपाचाल त्रिशलगिरि, नेमागिरि सिद्धाचल में विधमान से आप भलीमांति परिचित है। परन्तु पास में करहिया सिमारिया रेट चराई, दोहरा वरही, हीरामन कि घाटी वरही, वुकलेय, सुजवाया, भौरापनिहार, से परिचित नहीं है। ऐसा ही पावन अतिशय क्षेत्र के आमीगांव पहाड़ी में बनी प्राचीन प्रतिमाएं चतुर्थ कालीन प्रतीत होगी। महाकवि पंडित रईयू ने भाषा अपभ्रंश में रचित ग्रंथ सम्मय जिन चरियु में लिखा है कि पनिहार में एक विशाल भटारक मठ था। आचार्य गुणकीर्ति के शिष्य यशकीर्ति की प्रेरणा से ही ग्वालियर किला-बरई आमीगांव में प्रतिमाओं का निर्माण कराया गया।

शिलालेख अनुसार महाराजा श्री पानसिंह दवे राजे के शासन काल का उल्लेख मिलता है क्षेत्र और प्रतिमाएं असुरक्षित एवं जीर्ण-शीर्ण हैं। क्षेत्र के प्रकाश में आते ही जीर्णोद्धार की भावना सभी हृदय में प्रबल हुई, क्षेत्र की साफ-सफाई एवं समतलीकरण कराने हेतु जो.सी.बी. मशीन लेकर दिनांक 10-11-13 रविवार को जा रहे थे। तभी क्षेत्र से लगभग आधा किलोमिटर पहले एक विशाल काले सर्प ने प्रकट होकर रास्ता रोका, कार्य को तुरंत स्थगित कर विद्वानों एवं मुनि श्री विश्रुत सागर एवं मुनि श्री विश्वास सागर महाराज जी से परमार्श लिया इनके द्वारा बताये अनुसार एवं मार्गदर्शन में देवाज्ञा लेने हेतु क्षेत्र पर दिनांक 13-11-13 (तिथि कार्तिक शुक्ल एकादशी को) बुधवार को विशेष पूजा आयोजित कर देवाज्ञा प्राप्त कर दिनांक 14-11-13 से कार्य प्रारम्भ किया। कार्य निर्विध्न चालू एवं प्रगति पर है। सफाई में मिट्टी हटाने पर मंदिर एवं प्रतिमाओं के अवशेष प्राप्त होते है। और आगे प्राप्त होने की संभावना है। मुनि श्री विश्रुत सागर जी एवं विश्वास सागर जी महाराज दिनांक 2013 में क्षेत्र के दर्शन किये हैं। इन्हीं के मार्ग दर्शन में क्षेत्र का विकास किया जा रहा है।

आपको जानकर हर्ष होगा, अति प्राचीन, अतिशयकारी, प्राचीन जैन धरोहर श्री शांतिसागर आमीगांव की पावनधरा पर जहां अति शोभनीय अतिशयकारी प्राचीन जैन प्रतिमायें विराजमान है। यहां प्राकृतिक सौन्दर्य के बीच श्री मूलनायक पंचम चक्रेश्वर श्री शान्तिनाथ भगवान की श्री अरहनाथ जी भगवान, श्री कुंथनाथ जी भगवान एवं प्रथम तीर्थंकर श्री आदिश्वर आदिनाथ भगवान की जिन प्रतिमा खड़गासन मूल रुप से विराजमान है जिनका रुप देखते ही बनता है। जिन प्रतिमा के दर्शन करने से ही सुख एवं शांति की अनुभूति होती है। यह क्षेत्र अति प्राचीन जैन धरोहर है। जिन प्रतिमा के दर्शन करने से ही सुख एवं शांति की अनुभूति होती है। यह अनुभव आप और हम द[illegible] मात्र से महसूस कर सकते ह। क्षेत्र के अतिशय को लेकर हुई रोचक उदाहरण नीचे लेख में प्रस्तुत है। कई वर्ष पुरानी धरोहर की रक्षा अभी तक वहां प्रत्यक्ष में विराजमान रक्षक देव ही कर रहे थे। अब क्षेत्र की रक्षा का एवं विकास/निर्माण का कार्य आप और हम लोगों को निमित्त योग और संयोग से दिया है। इस क्षेत्र के पुर्ननिर्माण एवं विकास में सपरिवार सहित सहभागी बने। शास्त्रो द्वारा प्रमाणित एवं गुरुओं की वाणी द्वारा प्रमाणित है। कि प्राचीन जिन मंदिर जो कि जीर्णशीर्ण हो उसका जीर्णोद्धार कराने से कई गुना पुण्य मिलता है। पुर्ण्याजन के लिए अपने सपरिवार सहित भागीदार बनें। एक बार पधारकर दर्शन अवश्य करें।

यह बात बहुत गौरवान्वित है कि हम और आप इस क्षेत्र के जीर्णोद्धार के प्रारंभिक धरातल के साक्षकार होंगे।

1. 25-30 वर्ष पहले श्री सुरेश यादव आमीगाँव निवासी जो गाय चराया करते थे एक दिन क्षेत्र पर बनी गुफा में दोपहर को सो गये तो उन्हे सपना अ. .. कि तू जा तेरी नौकरी लगेगी। ऐसा सपना देख वह जाग गया। और वह दूसरे दिन ही नौकरी हेतु मोतीमहल ग्वालियर में आया वहाँ पर श्री एम.के.जैन (इंजीनियर) एवं श्री ओ.पी. जैन (बाबू पीडब्लूडी) के कार्यालय पर संयोग से सामने घूम रहा था कि श्री ओ.पी.जैन साहब का बाहर आना हुआ उन्होंने इसे देखकर अनायास पूछा क्यो लड़के नौकरी करेगा। तो सुरेश ने कहा हां साहब तो श्री जैन ने कहा कि चपरासी की नौकरी करनी पड़ेगी तो सुरेश तैयार हो गया तब श्री जैन ने अपने बड़े साहब से उसे मिल वाया तो साहब ने उसे कच्चे में नौकरी पर रख लिया उसके काम से खुश होकर एक वर्ष में उसे पक्के में कर दिया जब वह पक्के में हो गया तब उसे एक रात सपना आया कि तू मुझे भूल गया मैंने तेरा काम कर दिया अब तू मेरा काम कर तो वह सपने में ही कहता की बाबा हम आप का क्या काम कर सकते है। तो बाबा सपने में कहते है। कि जहां पर तू नौकरी करता है। उन्हें स्थान के दर्शन करा दें। ऐसा सपना देख उसे रातभर नींद नहीं आई सुबह होते ही ऑफिस गया और सारी कहानी जैन

साहब को बताई तब श्री जैन साहब ने क्षेत्र पर दर्शन किये और कुछ साफ सफाई कराई आज सुरेश यादव को 40,000/- प्रतिमाह मिल रहे है। और वह क्षेत्र का परम भक्त है और पूरा सहयोग करते है।

2. श्रीमान संजय मिश्रा जी बरई निवासी जिनके पांच मुनियाँ ही थी। लड़का नहीं था उन्होंने कई जगह जाकर मन्नत मांगी पर सफलता नहीं मिली। श्री मिश्रा जी के अनुसार एक दिन उनको सपना आया कि हम तुम्हारे पूर्वज हैं। हम जिनकी पूजा आराधना करते है। तू भी प्रत्येक चौहदस के दिन आमीगांव पहाड़ी पर स्थान हैं वहां पुजा किया कर। उन्होंने सपने की बात को मानकर वहां प्रत्येक चौहदस को जाना शुरु कर दिया दो वर्ष के भीतर उन्हें पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई आज उन का पुत्र 7-8 वर्ष का हो गया। आज भी श्री मिश्रा जी प्रत्येक चौहदस को क्षेत्र पर पूजा करने आते है। व पूर्ण सहयोग प्रदान करते है।

3. गांव के निवासियों के अनुसार नागाबाबा (ग्रामीणों द्वारा भगवान को नागा बाबा के नाम से पुकारा जाता है।) के आस-पास जब-जब गंदगी करने जाते तो गांव में संध्या समय पत्थर फिकते थे। जो किसी भी व्यक्ति को हानि नहीं पहुंचाते थे। पहले तो गांववाले आपसी रंजिश वालों पर शक कतरे थे। पर जब गांववालों ने पूरी जांच की तो उन्हें यह ज्ञात हुआ कि पत्थर नागा बाबा की तरफ से आते हैं। यह सिलसिला विगत पिछले वर्ष तक चला आ रहा था। गांव वालों ने गांव खाली करने का मन बना लिया था। जब से हम लोगों ने दर्शन किये विकास कार्य आरंभ किया। तब से पत्थर फिकना बंद हो गये।

4. कुछ शरारती लोगों ने मूर्तियों से छेड़छाड़ करने की चेष्ठा की तो वो पागल हो गये।

5. क्षेत्र जी पर एक चमत्कारी कुण्ड भी है जिसके बारे में गांव वाले कहते हैं कि इस कुण्ड के पानी से रोग दूर हो जाते हैं। कुण्ड जीर्ण-शीर्ण था। अब विधिवत् कुण्ड का जीर्णोद्धार हो चुका है। विगत दो वर्षों से कई श्रद्धालुओं के रोग दूर हुए है।

6. जनवरी 2014 में क्षेत्र पर चौकीदार निहाल सिंह यादव को पांच दिन बराबर सपना आया हम दबे हैं। हमें निकाले। इसकी एक कहानी है। जब से.सी.बी से समतलीकरण का काम चल रहा था। तब अनजाने में जेसीबी द्वारा क्षेत्रपाल जी के ऊपर का पत्थर टूट गया। जो ऊपर आ गया था। उसे सर पर रखकर घूम रहा है ऐसा सपना दिखता था, और वो उसी जगह रुकता था, जिस जगह क्षेत्रपाल जी की मूर्ति दबी थी। पाचवें दिन जब खुदाई की तो क्षेत्रपाल जी मूर्ति प्राप्त हुई।

7. जेसीबी द्वारा समतलीकरण का काम चल रहा था। तब अनजाने में ऊपर पहाड़ी से एक विशाल पत्थर लुड़कते-लुड़कते पत्थर के बीच में आय एक बबूल के पेड़ को तोड़ते हुए नीचे लुड़का और नीचे मकान थे। पत्थर को लुड़कते देख ऐसा लग रहा था, आज तो इस पत्थर के द्वारा चार-पांच मकान टूटेंगे और कोई अनहोनी हो जायेगी। लेकिन चमत्कार यह हुआ कि ठीक मकानों के पीछे वह पत्थर ऐसे थम गया कि जैसे वह पत्थर किसी ने रोक दिया हो।

8. रविवार, 30 मार्च 2014 को तिथि चैत्र अमावस्या वीर निवार्ण सं. 2540 को महामेला का आयोजन किया था। जिसमें 3500 श्रद्धालुओं की उपस्थिति हुई। उस मेले में जब अभिषेक का कार्यक्रम किया जा रहा था। तब ठीक दोपहर 2 बजकर 30 मिनट पर यह चमत्कार हुआ कि अभिषेक करने से पहले जैसे ही क्षुल्लक श्री ने मंत्रोंचारण किया, तो देवों द्वारा श्री शांतिनाथ जी का अभिषेक होने लगा। यह नजारा हजारों श्रद्धालुओं ने देखा। प्रतिमा के सिर एवं मुख पर जल दिखाई दिया।

हम प्रतिबद्ध है इस क्षेत्र के जीर्णोद्धार एवं विकास के लिए है और आप.....

एक प्राचीन जिन मंदिर के जीर्णोद्धार से सौ नये मंदिर निर्माण करने के बराबर सतिशय पुण्य मिलता है।

आपके सहृदय सहयोग की अपेक्षा में

श्री शांतिगिरि अतिशय क्षेत्र आमी गाँव सेवा समिति (रजि.)

क्षेत्र के जीर्णोद्धार विकास योजना जिनमें आपका सहयोग आपेक्षित है-

मास्तम्भ निर्माण	11 लाख
(एक से अधिक पुर्ण्याजक भी)	
सम्यक दर्शन द्वारा	5लाख 55 हजार 5 सौ 55
सम्यक ज्ञान द्वारा	5लाख 55 हजार 5 सौ 55
सम्यक चारित्र द्वार	5 लाख 55 हजार 5 सौ 55

शासन द्वारा प्रदत्त 4 हे. भूमि की बाउन्ड्री वॉल 10 फुट बाउन्ड्री वॉल 21 हजार

गर्भग्रह परिसर	5 लाख 55 हजार 5 सौ 55
समतलीकरण हेतु	5 लाख

पुर्ण्याजक 1 लाख श्री निर्मल कुमार जैन नया बाजार लश्कर पुर्ण्याजक 1 लाख 21 हजार श्री प्रकाश चन्द्र जैन डी.डी.नगर पुर्ण्याजक 71 हजार श्री सुरेश चन्द्र जैन (गुजिया वाले) राजाखेड़ा राजस्थान 41 हजार अशोक कुमार जैन (एडवोकेट अम्बाह)

क्षेत्र पर गर्भग्रह के आगे हॉल निर्माण (प्रति 15 25 वर्गफुट भाग)

2 लाख 51 हजार

श्री आदिनाथ भगवान का जीर्णोद्धार वज्रलेप

1 लाख 51 हजार

श्री कुंथनाथ भगवान का जीर्णोद्धार बज्रलेप

1 लाख 51 हजार

श्री शांतिनाथ भगवान का जीर्णोद्धार बज्रलेप

1 लाख51 हजार

श्री आदिनाथ भगवान का जीर्णोद्धार बज्रलेप

1 लाख 51 हजार

श्री कुंथनाथ भगवान का जीर्णोद्धार बज्रलेप

27 अक्टूबर 2013 प्रथम स्थिति

3 नवम्बर 2013

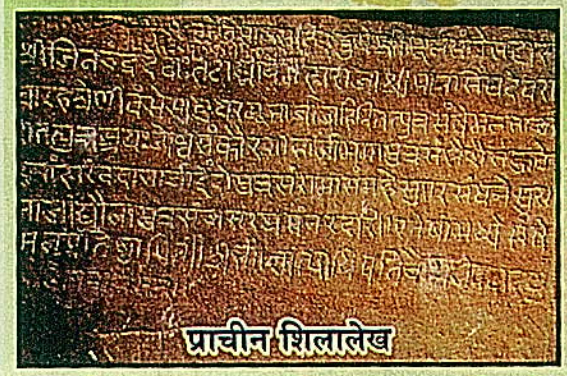
प्राचीन शिलालेख

दिसम्बर 2013

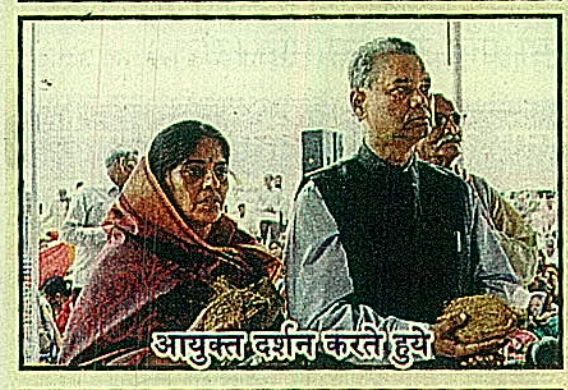
आयुक्त दर्शन करते हुये

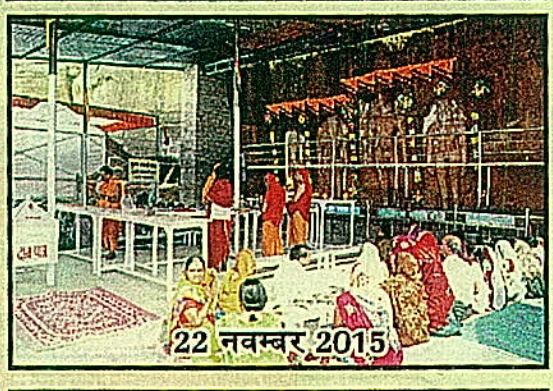
22 नवम्बर 2015

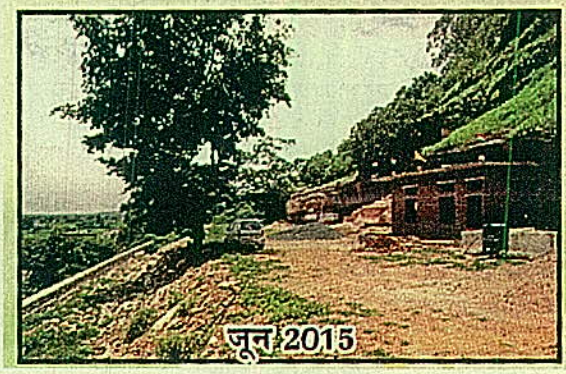
जून 2015

अक्टूबर 2015

1 लाख 51 हजार

श्री शांतिनाथ भगवान का जीर्णोद्धार बज्रलेप

1 लाख 51 हजार

पुर्ण्याजक श्री विनोद कुमार सोनपाल जी जैन पोरसा वाले दीनदयाल नगर ग्वालियर

श्री अरहनाथ भगवान का जीर्णोद्धार बज्रलेप

1 लाख 51 हजार

श्री महावीर भगवान की नव प्रतिमा निर्माण

1 लाख 51 हजार

पुण्यार्जक पांडे अशोक कुमार चेतन कुमार जी जैन (रौन वाले)

दीनदयाल नगर ग्वालियर

कमरा निर्माण (15 10 वर्गफुट)

1 लाख 51 हजार

क्षेत्रपाल जी का जीर्णोद्धार एवं मंदिर का निर्माण

1 लाख 21 हजार

पुर्ण्याजक श्री प्रशांत [illegible] रिंकी जैन बैंगलोर (पुत्र-पुत्रवधु, प्रकाशचन्द जैन)

क्षेत्र पर लगने वाली काली गिट्टी

जे.जे. ग्रेनाईट हरीलीला पेट्रोलपम्प बिलौआ पुर्ण्याजक श्री सतीश जैन, आर.के.जैन, ए.के.जैन (भिण्डवाले) ग्वालियर

क्षेत्र पर लगने वाली सोलर लाइट

पुर्ण्याजक श्रीमान वीरेन्द्र कुमार जैन (भिण्डवाले) ग्वालियर समर्शिबल पम्प, संजय कॉम्पलेक्स इन्दरगंज ग्वालियर

रोग हरण कुण्ड जीर्णोद्धार 51 हजार

51 फीट ऊंचा ध्वज स्थाई 51 हजार

तीर्थंकर तपोवृक्ष उद्यान प्रति वृक्ष 11 हजार

विशेष निवेदन: आप रुपये 1,2,3,4,5.... प्रतिदिन से सदस्य बन क्षेत्र के जिर्णोद्धार एवं विकास में सहयोगी बन पुणर्याजन कर सकते है। (भविष्य में होने वाले पंचकल्याणक में सभी पात्रों का चयन लकी ड्रॉ द्वारा इन्ही सदस्यों से किया जायेगा।)

नोट: उपरोक्त में पुण्यार्जक के नाम का शिलालेख चित्र साहित्य स्थापित किया जायेगा।

Suggestions to protect the hill at Konakondla, AP from Destructions.

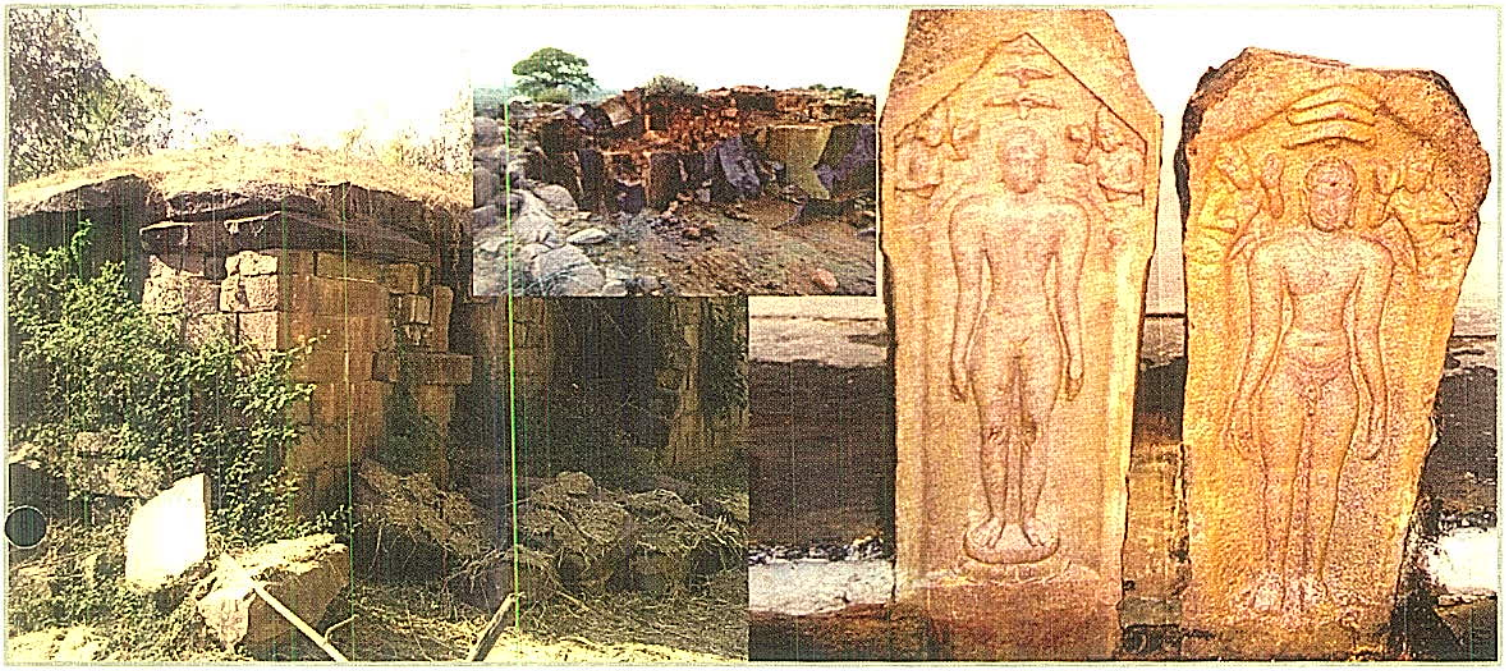

Samyak Dharshan to all.

On 27.03.2016 we went to Konakondla (7 Members from Tamil Nadu and one Mr.Suriyaprakash from Ananthapur, who wrote the book on Jainism in Rayalaseema Region of AP). We found that the surrounding side of the hill was destroyed with Quarry operations and blasting going on very close to the Tirthankar Statues, regularly.

We had planned to send petition to the District Collector, the State Archaeology Dept. and the Director of Mines and Geology by mail.

AWAKE! This is need of hour to protect not only our greatest Acharya Kund Kund Janma Bhoomi, also the world famous Jambhudweep Chakra is proclaiming here only the example of Jaina Science.

- **Frequent visit to this holy place.** All the Jain organisations from Tamil Nadu, Karnataka and Andhra Pradesh needs to make arrangement of tour at least once a year.
- **Create awareness to the local.**
  - ✓ To create awareness among local people by preaching history and the importance of the monuments
  - ✓ Jain organisations in the above States may take in charge for some activities like Cultural / Drama / Dance programme about Jainism.
  - ✓ Providing Visual shows about the importance of the ancient monuments.
  - ✓ Approach the schools and colleges surrounding to the hill about 25km radius, to bring their students to the hill and provide small books or pamphlets to the school students.
- **Arrange programme quarterly** on Turn basis (Each Southern State need to make a programme once a year)
- **Provide medical facilities** to the local people at least once a year.
- Jains living nearer to the hill may **take Dharshan monthly once.** (Jains from Ananthapur District, from the border of Karnataka like Bellari and other Neighbor Districts of Andhra Pradesh).
- **Kindly give your valuable suggestions** to protect this Important Jain Monument hill, to us by mail ahimsawalk@gmail.com .

Though Acharya KundKund Dev is the Greatest Acharya, why we didn't celebrate a programme with his name even yearly once?

"Srutha Panchami" is the suitable programme. It may be celebrated in the remembrance of Acharya Kundkund Dev at Konakondla every year is highly appreciable.

Let us Join to protect the Heritages of Jainism!

Vande Jinavaram!

Jai Jinendra!

Kindly convey this message to your friends and relatives.

Contact : S.Dhanajayan
Secretary, 94440 04155.
V.Sowthermenthiran
Treasurer, 98412 40333.

Regd. Office: 24/2, Vinayagar Koil St,
Sastry Nagar,
West Saidapet, Chennai - 15.

एक दिवसीय जीवंत जीर्णोद्धार एवं अहिंसा-विद्या यात्रा, कालगी कर्नाटक

फाल्गुन कृष्ण अमावस्या (26 फरवरी 2017)

जीर्णोद्धार

मुनि सेवा

जिनमंदिर निर्माण

जिनवाणी प्रकाशन

सामूहिक तीर्थ यात्रा

दिग. जैन सोसाइटी

जीवदया

जैन समाचार

जैन अवार्ड

जैन संघ आवास

एक कदम जीवंत जीर्णोद्धार की ओर....

एक क्षेत्र जिसका इतिहास ९वी शताब्दी और राष्ट्रकूट जैन राजाओं से जुड़ा हुआ है। भव्य जिनालय, अद्भुत प्रतिमाएं, उजाड़-वीरान मंडप इनकी कथा कह रहे हैं। दक्षिण के जिनालयों का वैभव लौटाने की दिशा में यह यात्रा एक अद्भुत कदम सिद्ध होगी। हमारे इतिहास के जानकार, विद्वत लोग और हर जगह से अपने क्षेत्र में प्रवीण लोग इस जीवंत जीर्णोधार में भागीदार बनेंगे। क्या आप भी हम सभी से जुड़कर वर्तमान समय के दक्षिण भारत के सबसे बड़े इस ऐतिहासिक आन्दोलन के साक्षी बनेंगे ?
९वी सदी का इतिहास आपकी प्रतीक्षा कर रहा है।

कार्यक्रम विवरण – अहिंसा यात्रा, क्षेत्र का इतिहास परिचय एवं क्षेत्र पर श्रमदान।
बैंगलोर, मुंबई, पुणे, हैदराबाद, दिल्ली, भोपाल आदि से साधर्मियों का आगमन।
क्षेत्र संरक्षण, यात्रा में भोजन, आवास, परिवहन आदि के लिए निम्न खाते में दान दें।
खाता एवं बैंक नाम – जैन संघ पुणे (JSP), बैंक ऑफ बड़ौदा, माणिकबाग, पुणे
खाता संख्या: 37940100001454, IFSC Code – BARB0MANIKB
पंजीकरण लिंक - https://eSurv.org?u=Kalgi
संपर्क – 8087597176, 8806795854, 8390764422, 9028746993
ईमेल – jainsanghpune@gmail.com, www.jainsanghpune.com

जैन संघ पुणे (JSP) एवं गुलबर्गा जैन समाज

Renovation required at Valpandal Temple

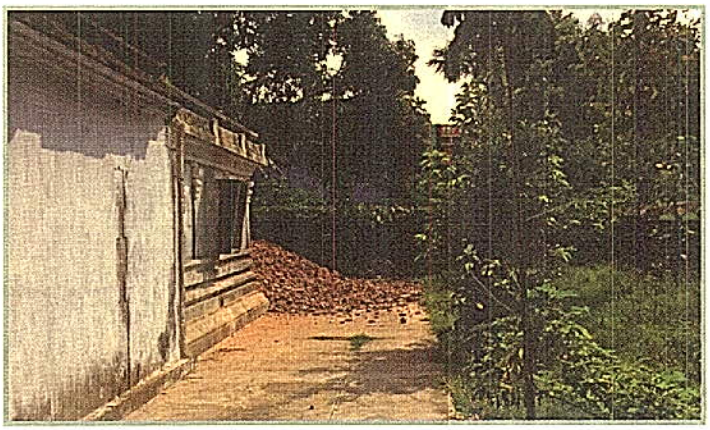

Renovation at essakolathurtemple

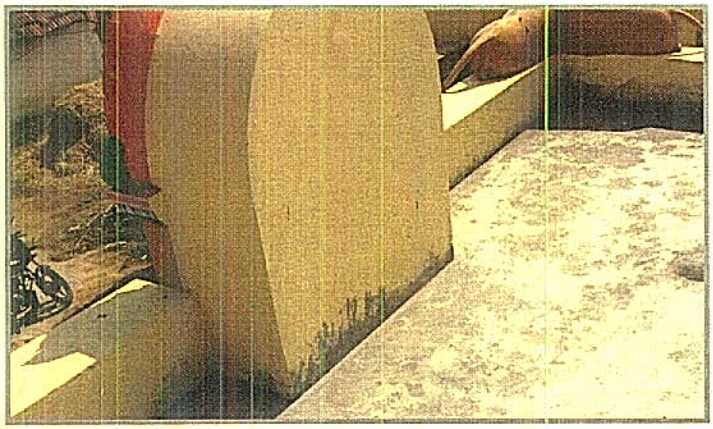

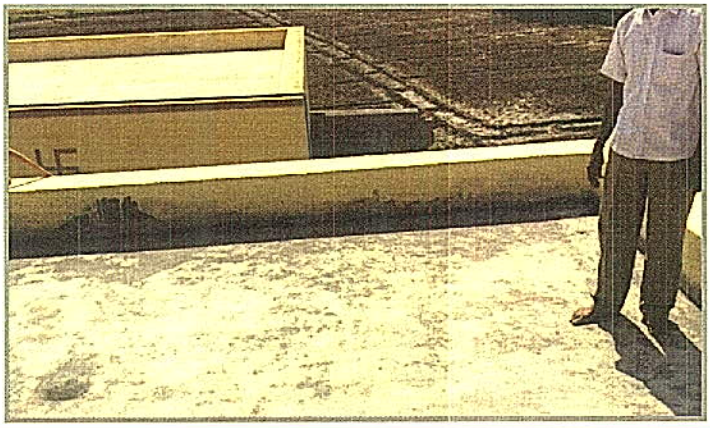

Renovation at Krishnapuram gingee

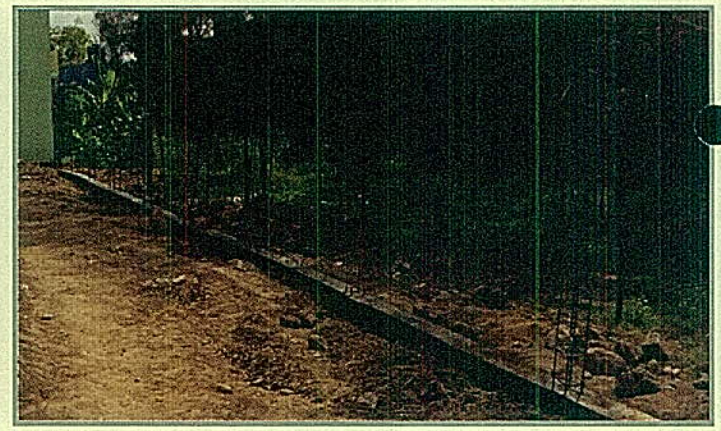

Renovation required at Kizh Vailmoor

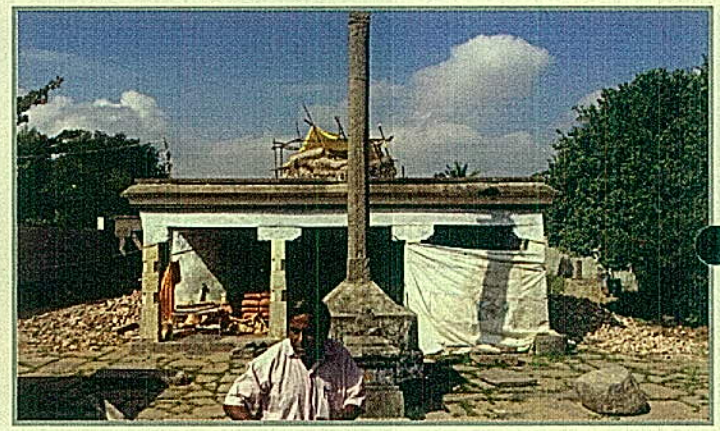

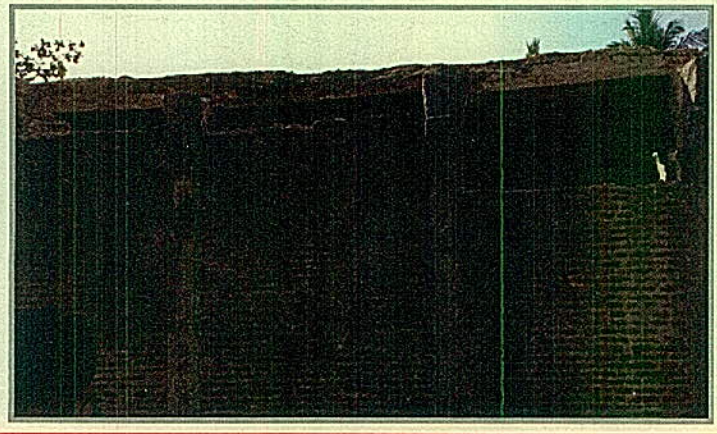

Renovation required at Kizh Vailmoor

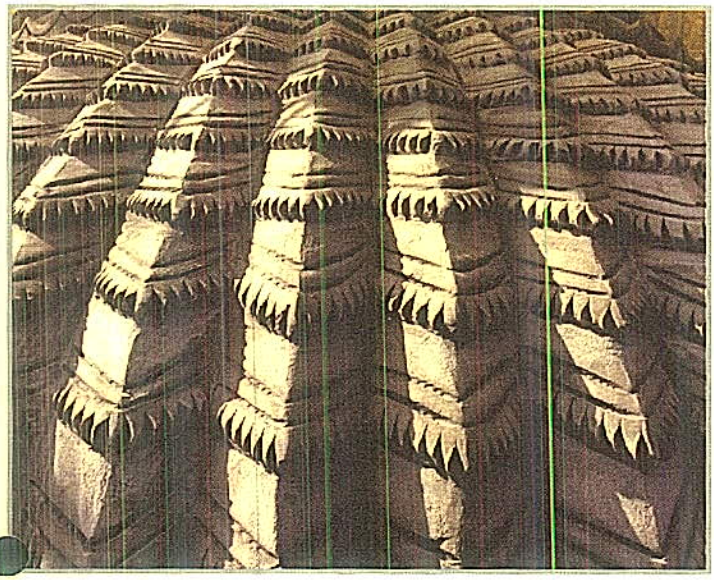

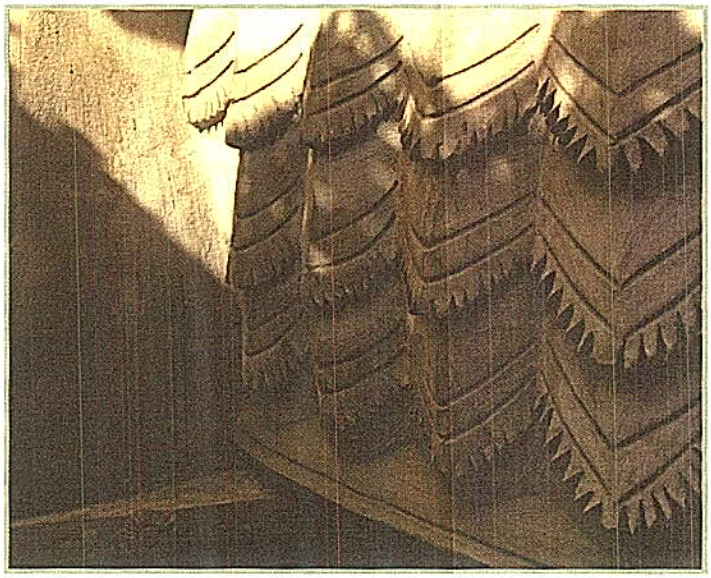

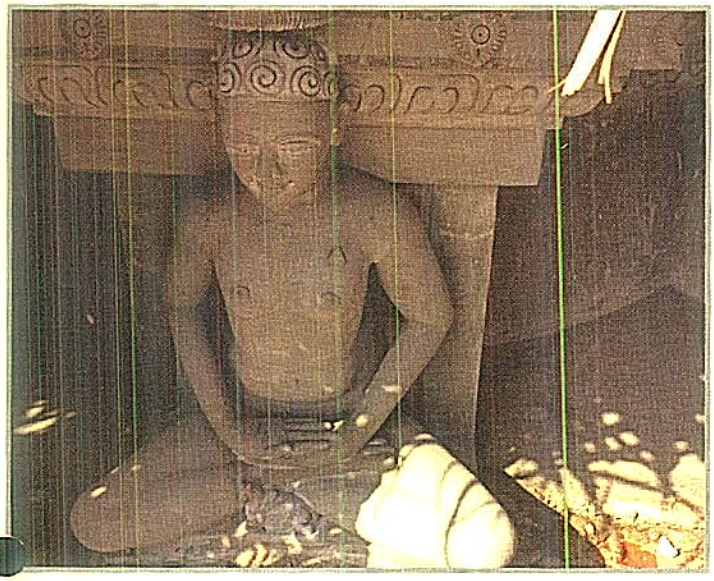

तीर्थक्षेत्र जीर्णोद्धार श्री क्षेत्र पालीताना, (गुजरात) की झलकियां

पूर्व स्थिति

वर्तमान स्थिति

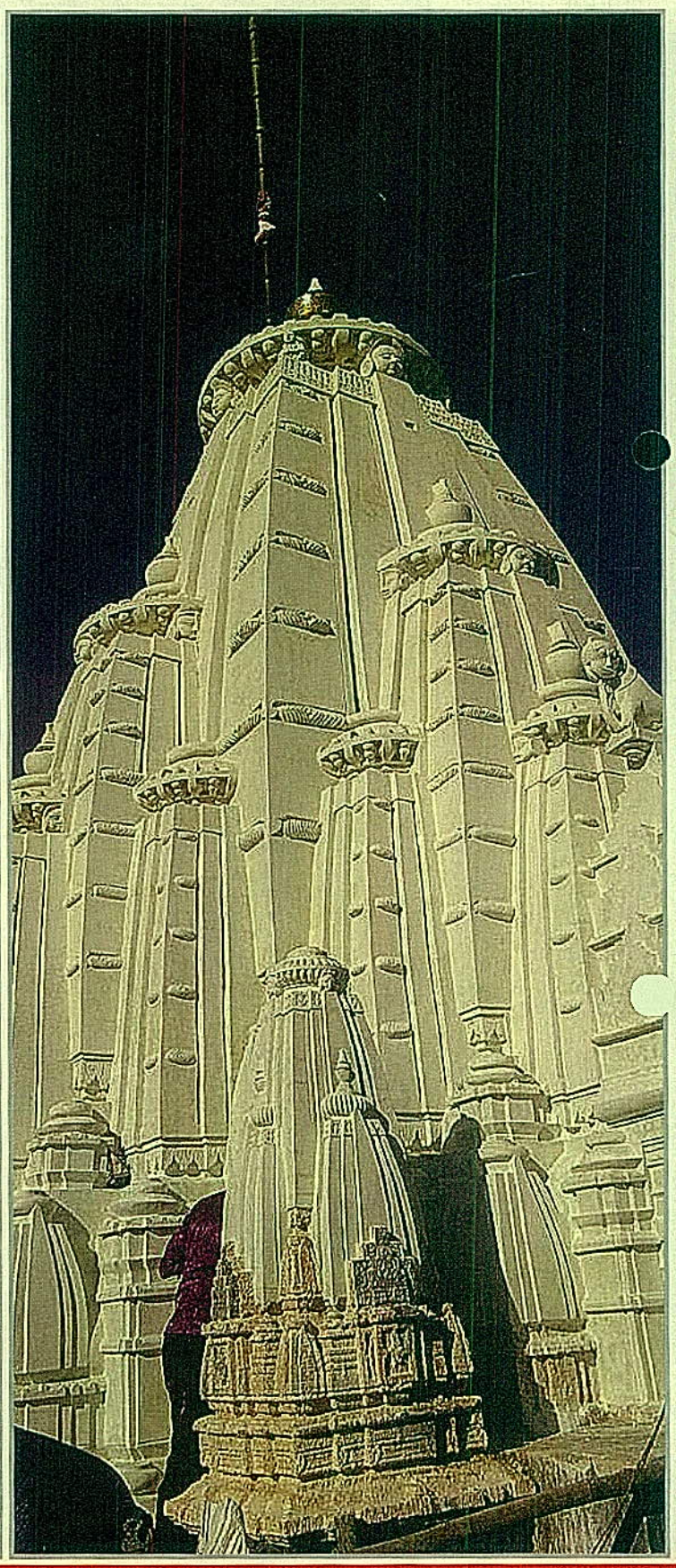

हमारे नये बने सदस्य

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार में हम हृदय की गहराईयों से आप सभी का स्वागत करते हैं, अभिनंदन करते हैं।

आजीवन सदस्य

श्री राहूलकुमार गौतमसा जैन, साहुजी
औरंगाबाद (महा.)

श्री श्रेणीक पुनमचंद साहुजी
औरंगाबाद (महा.)

श्री नवीनकुमार सुरेशचंद जैन
सिलचर (असाम)

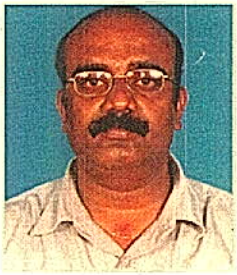
श्री अप्पंदराज सोमाप्रभन
सेम्मांदलाम (तमिलनाडू)

श्री अधिराजन अप्पंदराजन जैन
वालूदुरेदी (तमिलनाडू)

श्री अथिराजन राजेन्द्र जैन
ओरिकाई (तमिलनाडू)

श्री राजासेकरन जयाबाल
मरइमलईनगर (तमिलनाडू)

श्री राजेशकुमार जैन (कर्यावाले)
अशोकनगर (म.प्र.)

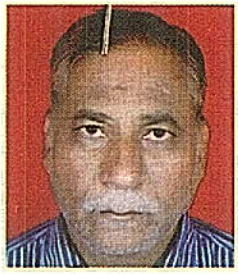
श्री महेशकुमार बाबूलाल जैन (घमंडी)
अशोकनगर (म.प्र.)

श्री प्रमोदकुमार जैन
अशोकनगर (म.प्र.)

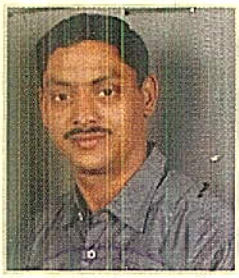
श्री हरीष महावीरकुमार जैन,
वमनावरईसागढ, अशोकनगर (म.प्र.)

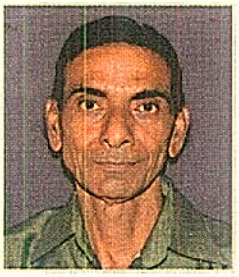
श्री झमकलाल हिरालाजी पंचोली (जैन)
उदयपुर (राज.)

श्री महेन्द्रकुमार केशरीमलजी जैन
गंजबासौदा (म.प्र.)

श्री संजय नेमीचंद जैन
गंजबासौदा (म.प्र.)

श्री जीतेश राजकुमार जैन
गंजबासौदा (म.प्र.)

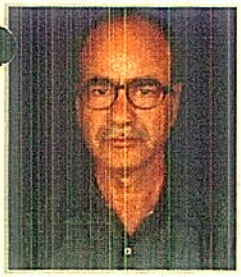
श्री महेन्द्रकुमार धन्नालालजी जैन (बडकुल)
गंजबासौदा (म.प्र.)

श्री प्रशांत पदमकुमार पहाड़िया
सरुरानगर (हैद्राबाद)

कु.ब्र. गीतादीदीजी प्रभासचंद जैन
भिंड (म.प्र.)

एन.सी. धरनेंद्रकुमार गुब्बी
(तुमकूर) कर्नाटक

श्री निर्मल जैन एस.एन.बालेपेट
कर्नाटक (बेंगलोर)

श्री सुभाष जयचंद डी. लोहाडे
हैद्राबाद (तमिलनाडू)

डॉ. के.अजितदास जैन
चेन्नई (तमिलनाडू)

डॉ प्रदीपकुमार महावीरप्रसाद जैन
खंदोली, आरा (उ.प्र.)

श्रीमती प्रीति देवेन्द्र जैन
राजगढ (म.प्र.)

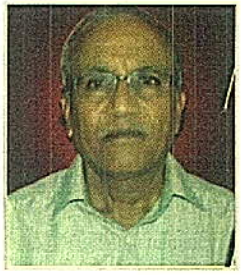
श्री महेशकुमार फुलचंद गुप्ता
गोंदिया (महा.)